RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
विशेष संपादक
मुकेश कुमार सिंह
सहायक संपादक
कोमल सुल्तानिया
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
राजनीतिक ब्यूरो
अमरेंद्र शर्मा 9899360011
प्रभाकर कुमार राय
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
पटना : अनुभव रंजन
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
जमुई : विधुरंजन उपाध्याय
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
मुंगेर : सिद्धांत
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता 9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : स्वाति, रंजीत कुमार
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION
PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 9, अंक : 2, अक्टूबर 2021, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

05 विकास वैभव ने प्रवीण को दी बधाई

बिहार विधानसभा उपचुनाव... 11

रोहतासगढ़ किला से होगा ... 20

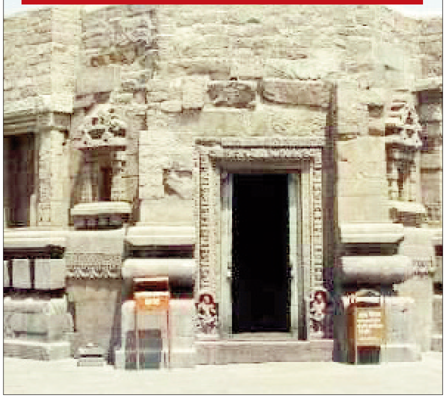

तापसी पन्नू ने बताई 'रश्मि रॉकेट.. 44

बच्चों पर बढ़ते अपराधों पर नियंत्रण हो 36

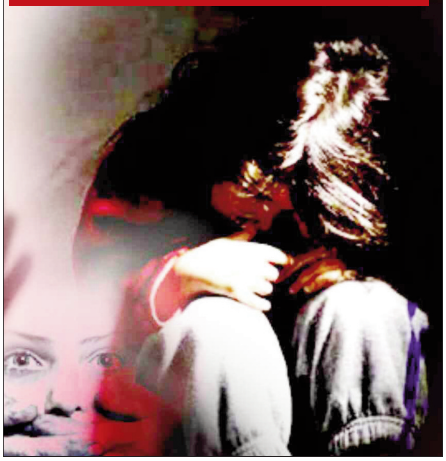

गांधी-शास्त्री के आदर्शों पर हम कितना चल पाए

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

भले ही देश आजादी के 75वें साल में प्रवेश करने पर ह्यअमृत महोत्सवह्ण की तैयारियों में जुटा हो, लेकिन यक्ष प्रश्न यही है कि आज गांधी-शास्त्री जयंती पर हम क्या उनके आदर्शों का भारत बनाने का दावा कर सकते हैं। गांधी आज के दौर में कितने प्रासंगिक हैं, इसकी याद पिछले दिनों अमेरिका यात्रा के दौरान देश के प्रधानमंत्री को अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने दिलाई। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा गांधी जी की वैचारिक संपदा से इतने अभिभूत थे कि वे गाहे-बगाहे उनका जिक्र करते रहे। सवाल यह है कि हमारे सत्ताधीशों व राजनीतिक दलों ने अपने आचार-विचार में गांधी दर्शन को कितना उतारा। नीति-नियंताओं ने गांधी जी की रीतियों-नीतियों को विकास की परिभाषा में किस सीमा तक समाहित किया। जब गांधी जी कहा करते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है तो उसका मतलब महानगरों पर केंद्रित विकास के खतरे से आगाह कराना था। विडंबना यही है कि सत्ताधीशों व नौकरशाही की तमाम नीतियां शहर केंद्रित होती चली गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि गांवों से भूमि पुत्रों का तेजी से पलायन हुआ और उनका खेती से मोह भंग होता चला गया। खेती घाटे का सौदा बन गई। वहीं जनसंख्या के दबाव से पहले से ही चरमराई शहरी व्यवस्था पर गांवों से आये लोगों का बोझ बढ़ता चला गया। अपनी जमीन से उखड़े लोग दिल्ली-मुंबई की तमाम झुग्गी-बस्तियों में किसान से श्रमिक में तबदील होकर दोयम दर्जे का जीवन जीने लगे। हालिया किसान आंदोलन में किसानों की उस टीस की अभिव्यक्ति है, जिसे वे अपनी खेती की विरासत से उजड़ने के खतरे के रूप में देखते रहे हैं। दरअसल, खेती के योगदान को जीडीपी में प्रतिशत के रूप में नहीं देखा जा सकता। खेती देश की बहुसंख्यक आबादी की अस्मिता का प्रतीक है। यही वजह है कि सत्तर फीसदी किसानों के एक एकड़ से कम रकबे में खेती करने के बावजूद किसान कहलाना, उनकी अस्मिता का प्रतीक है। महज खेती करने वाले लोग ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से करोड़ों लोग आज भी खेती से जुड़े हैं। गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, हड़ताल-बंद जैसे लोकतांत्रिक हथियारों के जरिये देश के करोड़ों लोगों ने ब्रिटिश सत्ता को देश को आजाद करने को मजबूर कर दिया था। विडंबना देखिये कि आज आजाद भारत में आंदोलन के उसी साधन का किस तरह दुरूपयोग किया जा रहा है। कुछ किसान संगठन करीब एक साल से दिल्ली को घेरे हुए हैं। न्यायालय भी इस पर नाराजगी जाता चूका है। इससे आम लोगों को कितनी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, यह कोई भी समझ सकता है। लेकिन किसान नेताओं को इससे मतलब नहीं है। विडंबना देखिये कि जय जवान, जय किसान का नारा देने वाले लाल बहादुर शास्त्री के आदर्शों की हम आज अनदेखी कर रहे हैं। एक समय था जब केरल में चावल संकट को देखते हुए शास्त्री जी ने अपने घर में भी चावल का प्रयोग बंद कर दिया था। अनाज की कमी हुई तो दिन में एक समय खाना छोड़ने का आान किया, फिर खुद भी एक समय का खाना छोड़ा। खाद्यान्न संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री आवास के लान में फुलवारी हटाकर अनाज बो दिया और खुद किसानी की। जनसरोकारों के प्रति संवेदनशीलता का यह सबक आने वाली पीढ़ियों के लिये था। शास्त्री जी जब आदर्शों की बात करते थे तो उन आदर्शों को जीते भी थे। दहेज प्रथा का विरोध किया तो खुद भी शादी में दहेज नहीं लिया। हर समय राष्ट्र की चिंता और राष्ट्र की चिंता को अपनी व्यक्तिगत चिंता के रूप में देखना। कोई राजनीतिक आडंबर नहीं किया। सहजता व सरलता का जीवन जिया और बच्चों को न कभी ऊंचे पद दिये, न ही उनके लिये कोई बड़ी धन संपदा छोड़ी। सही मायनो में उन्होंने कहे को जिया। सामाजिक सरोकारों को संवेदनशील ढंग से पूरा किया। यही वजह है कि कृतज्ञ राष्ट्र आज भी उन्हें महानायक के रूप में याद करता है। एक समाज के रूप में भी हम गांधी व शास्त्री के आदर्शों को जीने में सफल नहीं रहे। आज 21वीं सदी में भी सांप्रदायिकता, जातिवाद, छुआछूत, नशाखोरी आदि कुरीतियों के कोढ़ से हम मुक्त नहीं हो पाये हैं। गांधी-शास्त्री की जयंती पर उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेने की जरूरत है। हमें उन महापुरुषों को सिर्फ श्रद्धांजलि देने से काम पूरा नहीं होगा अपितु उनके आदर्शों को जीवन में उतरना भी होगा।

बिहार की प्रतिभाये बेमिसाल है

बिहार के बच्चे अपनी मेहनत से हासिल करते है सफलता

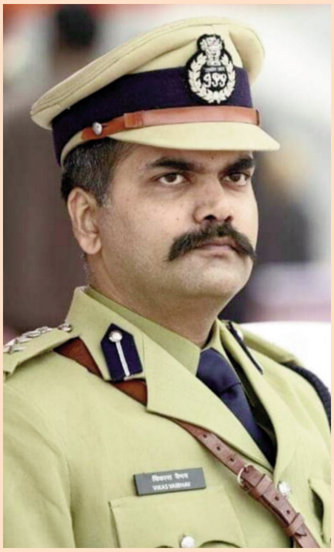

बिधुरंजन उपाध्याय

चकाई/जमूई-बिहार की प्रतिभाएं बेमिसाल है.यहाँ के प्रतिभावान व्यक्ति अपनी मेहनत से मुकाम बना लेते है.कल ही यूपीएससी के सिविल सर्विसेज परीक्षा का परिणाम आया.बिहार के कटिहार जिले के कदवा निवासी शुभम कुमार ने टॉप किया.टॉप टेन में तीन बिहारी बच्चे शामिल हैं.शुभम के अलावा हमारे जमूई जिला अंतर्गत नक्सल प्रभावित चकाई बाजार के रहने वाले प्रवीण कुमार को सातवाँ स्थान मिला है जबकि समस्तीपुर जिला के पूसा के सत्यम गांधी शामिल है.टॉप 100 में बिहारियों की कतार लंबी है.यह बिहार की विशिष्टता को दशार्ती है.बिहारी चाह लेते हैं तो हर मुश्किल को पार कर झंडा गाड़ ही देते हैं.

देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा यूपीएससी का रिजल्ट शुक्रवार को जारी हो गया है।इस बार भी बिहार के युवाओं ने दमखम दिखाया है। बिहार के जमुई जिला के चकाई बाजार निवासी सीताराम वर्णवाल के पुत्र प्रवीण कुमार ने परचम लहराया है। उन्हें सातवा स्थान मिला है। रिजल्ट जारी होते ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया। प्रवीण की सफलता से पूरे चकाई बाजार में जश्न का माहौल है। उसके घर पर बधाई देने वालों की भीड़ उमड़ रही है। प्रवीण के पिता सीताराम वर्णवाल ने बताया कि वह बचपन से ही मेधावी था। उसकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा जसीडीह स्थित रामकृष्ण विद्यालय से हुई थी। बाद में उसने पटना से सीबीएससी से मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा पास की। उसने कानपुर आईआईटी से पढ़ाई कर दिल्ली में दो साल से यूपीएससी की तैयारी कर रहा था। उसने दूसरे प्रयास में यह सफलता हासिल की है। प्रवीण की सफलता से उसकी मां वीणा देवी ,बड़े भाई धनंजय वर्णवाल, बहन दीक्षा वर्णवाल एवं चाचा रामेश्वर लाल वणार्वाल खुशी से झूम रहे हैं। चकाई बाजार में मेडिकल दुकान चलाने वाले सीताराम वणार्वाल ने काफी गरीबी में अपने पुत्र प्रवीण को पढ़ाया- लिखाया और आज प्रवीण ने पूरे चकाई का नाम देश स्तर पर ऊंचा किया है। प्रवीण की मां वीणा देवी ने कहा कि प्रवीण सिर्फ मेरा बेटा ही नहीं पूरे जमुई जिला का बेटा है और उम्मीद है कि वह आगे चलकर समाज सेवा के साथ-साथ देश की भी सेवा करेगा।

क्या कहते है बिहारी के आईपीएस अधिकारी

इस सम्बंध में बिहार के बेगूसराय के बीहट निवासी गृह विभाग के विशेष सचिव आईपीएस अधिकारी विकास वैभव ने सभी बच्चो को शुभकामनाएं दी है.उन्होंने कहा बिहार के बच्चों में टैलेंट की कमी नही है.बस उनमे सही गाइडेंस की जरूरत है.आने वाली भविष्य की पीढ़ियां भी बिहार का नाम रोशन करेगी.

इस सम्बन्ध में जमूई जिला अंतर्गत सिकंदरा के रहने वाले किशनगंज पुलिस अधीक्षक आईपीएस अधिकारी कुमार आशीष ने कहा की यह हम सभी के लिए काफी गर्व की बात है की बिहार के बच्चों ने हमेशा अपने देश,राज्य,समाज एवं अपने माता-पिता का नाम रौशन किया है.बिहार और देश के सभी सफल अभ्यर्थियों को बधाई! जिनको सफलता नहीं मिली,वह इससे हतोत्साहित हुए बगैर प्रेरणा लेकर प्रण लें,सफलता उनके कदमों में होगी.सभी बच्चों को हार्दिक शुभकामनाएं इस सम्बंध में मुंगेर के रहने वाले आईपीएस अधिकारी जमूई के पुलिस अधीक्षक प्रमोद मंडल ने कहा की बिहार के बच्चों ने कमाल का प्रदर्शन किया है.यह सभी माता-पिता के लिए गर्व की बात है.बच्चों ने देश समेत बिहार का नाम रौशन किया है.जमूई जिला के अति नक्सल प्रभावित चकाई के प्रवीण ने सफलता की नई उच्चाईयो को छुआ है.सभी बच्चों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं!

इस सम्बंध में जमूई जिला के मलयपुर के रहने वाले आईपीएस अधिकारी उत्तरप्रदेश के शामली के पुलिस अधीक्षक सुकुर्ति माघव मिश्रा ने बच्चो को शुभकामनाएं देते हुए कहा की यूपीएससी में चयनित प्रतिभागियों से बिहार में शिक्षा का बेहतर माहौल बनाने के लिए प्रयास करने की अपील की,साथ ही उन्होंने बिहार में शिक्षा पर काम करने की वकालत की,ताकि बेहतर माहौल मिलने से छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए दूसरे राज्यों में न जाना पड़े.

संघ लोक सेवा आयोग का परिणाम हुआ जारी

टॉप-10 में टॉप पर बिहार का शुभम कुमार

संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा 2020 का परिणाम जारी कर दिया है.जिसमें कुल 761 उम्मीदवारों में से 545 पुरुषों और 216 महिला उम्मीदवार सफल हुई हैं. प्रीलिम्स परीक्षा अक्टूबर 2020 में आयोजित की गई थी.आयोग द्वारा मुख्य परीक्षा 8 जनवरी से 17 जनवरी 2021 तक आयोजित की गई थी.मुख्य परीक्षा पास करने वाले उम्मीदवारों को इंटरव्यू राउंड के दौर के लिए बुलाया गया था.भारतीय प्रशासनिक सेवा,भारतीय विदेश सेवा,भारतीय पुलिस सेवा और अन्य केंद्रीय सेवाओं (ग्रुप 'ए' और ग्रुप 'बी') में चयन के लिए इंटरव्यू राउंड या पर्सनालिटी टेस्ट 2 अगस्त से 22 सितंबर, 2021 तक आयोजित किया गया था.

कटिहार के शुभम कुमार यूपीएससी सिविल सेवा रिजल्ट में प्रथम रैंक हासिल किया है.शुभम कुमार कटिहार कै रहने वाले हैं.जमुई के प्रवीण कुमार को 7वां स्थान और समस्तीपुर के सत्यम गांधी को 10वां रैंक प्राप्त हुआ है. वहीं यूपीएससी ने बताया की टॉप 25 में 12 महिला है.यूपीएससी के रिजल्ट में किशनगंज के अनिल कुमार को 45वां रैंक,पूर्णिया के अनिल मिश्रा को 52वां रैंक, बेगूसराय के अनिल कुमार 226वां रैंक और पटना के ओम प्रकाश गुप्ता को 339वां रैंक प्राप्त हुआ है.ओम प्रकाश गुप्ता बीपीएससी 64वीं के रिजल्ट में टॉपर थे.

गौरतलब है कि यूपीएससी के द्वारा सिविल सेवा परीक्षा का आयोजन हरेक साल तीन चरणों में करता है, जिनमें प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू शामिल हैं. इन परीक्षाओं के माध्यम से भारतीय प्रशासनिक सेवा (कअर), भारतीय विदेश सेवा (कत्र्र) और भारतीय पुलिस सेवा (कढर) सहित कई अन्य सेवाओं के लिए उम्मीदवारों का चयन होता है.वहीं रैंक के आधार पर ही अभ्यर्थियों का कैडर डिसाइड किया जाता है.

यूपीएससी के टॉप-10 में बिहारियों का रहा जलवा

यूपीएससी में प्रथम रेंक लाने वाले शुभम कुमार बिहार के कटिहार जिले के कदमा के रहने वाले हैं और सिविल सेवा परीक्षा 2020 में पहली रैंक हासिल की है.बता दें कि इससे पहले शुभम ने आईआईटी बॉम्बे से बी.टेक में ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की है.आईएएस एग्जाम में शुभम ने वैकल्पिक विषय के रूप में मानव

विज्ञान के साथ परीक्षा पास की है.

2. जागृति अवस्थी ओवरऑल सेकेंड रैंक हासिल करने वाली महिला उम्मीदवारों में टॉपर हैं.उन्होंने टअठकळ भोपाल से बीटेक में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से स्नातक किया है.भोपाल शहर के एक मध्यमवर्गीय परिवार से निकली जागृति ने यूपीएससी की परीक्षा में ऑल इंडिया दूसरी और महिलाओं की फेहरिस्त में पहली रैंक हासिल की है.जागृति इससे पहले गेट एग्जाम में भी 51वी रैंक हासिल कर चुकी हैं.

3. अंकिता जैन आगरा की बहु और दिल्ली की बेटी ने वढरउ के एग्जाम में देश में तीसरा स्थान प्राप्त कर सफलता का परचम लहराया है.वर्तमान में वह ऑडिट एंड अकाउंट सर्विसेज मुंबई में तैनात हैं।

4. यश जालुका झारखंड प्रदेश के धनबाद जिले के झरिया में रहने वाले यश ने आईएएस एग्जाम में चौथा स्थान हासिल किया है.यह धनबाद के लिए बेहद ही गर्व की बात है.

5. ममता यादव यूपीएससी परीक्षा 2020 में पाँचवाँ स्थान हासिल करने वाली ममता ने इससे पहले भी वर्ष 2019 की परीक्षा में आल इंडिया 556वां रैंक प्राप्त किया था.उन्हें उस समय आईएएस का पद न मिलने पर उन्होंने वर्ष 2020 में दोबारा से परीक्षा दी और अपना मुकाम हासिल कर लिया.

6. मीरा केरल राज्य के त्रिशूर शहर में कोलाझी नाम की एक छोटी सी जगह से निकली मीरा ऑलइंडिया आईएएस एग्जाम 2020 में छठी रैंक लाकर प्रदेश का नाम रोशन किया है.

7. प्रवीण कुमार वर्णवाल मूलरूप से बिहार के नक्सल प्रभावित जमुई जिले के चकाई बाजार के रहने वाले हैं.प्रवीण के पिता मेडिकल स्टोर चलाते है.यूपीएससी की आईएएस परीक्षा में ऑलइंडिया 7वीं रैंक लाकर सफलता हासिल की है.

8. कार्तिक जीवनी गुजरात कैडर के आईपीएस अधिकारी कार्तिक ने यूपीएससी एग्जाम 2020 में 8वां स्थान हासिल किया है.कार्तिक ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में पढ़ाई की है.

9. अपाला मिश्रा उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद की रहने वाली हैं.उन्होंने सिविल सेवा परीक्षा 2020 में नौवीं रैंक हासिल की है.अपाला मिश्रा गाजियाबाद के वसुंधरा सेक्टर-5 में ओलिव काउंटी में रहती हैं और वर्तमान में पेशे से डेन्टिस्ट हैं.पिता आर्मी में कर्नल और बड़े भाई मेजर पद पर रहते हुए देश को अपनी सेवाएं दे रहे हैं.

10.बिहार के समस्तीपुर जिले के रहने वाले सत्यम गाँधी ने आईएएस 2020 के परिणाम आने के बाद टॉप-10 सूची के दसवें पायदान पर अपनी जगह बनाई है.बता दें कि सत्यम पिछले ढाई सालों से इस परीक्षा की तैयारी कर रहे थे.इसी मेहनत और लगन की बदौलत उन्होंने अपने आईएएस बनने के सपने को पूरा कर लिया है.

विकास वैभव ने प्रवीण को दी बधाई

यूपीएससी में परचम लहराने वाले चकाई के लाल प्रवीण के परिजनों से आईपीएस अधिकारी गृह विभाग के विशेष सचिव विकास वैभव ने दूरभाष पर बात कर दी शुभकामनाएं

जमूई जिला के चकाई बाजार के रहने वाले है प्रवीण वर्णवाल, आईजी विकास वैभव ने कहा माता-पिता के सपनों को पूरा करेगा प्रवीण

बिधुरंजन उपाध्याय

चकाई/जमूई-बिहार के जमुई जिला के चकाई बाजार निवासी सीताराम वर्णवाल के पुत्र प्रवीण कुमार ने यूपीएससी में परचम लहराया है.प्रवीण को सातवा स्थान मिला है.रिजल्ट जारी होते ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया.प्रवीण की सफलता से पूरे चकाई बाजार में जश्न का माहौल है.उसके घर पर बधाई देने वालों की भीड़ उमड़ रही है.

इस मौके पर बिहार के वरीय आईपीएस अधिकारी गृह विभाग के विशेष सचिव विकास वैभव ने रविवार को प्रवीण के पिता सीताराम वर्णवाल एवं उनकी माता वीणा देवी से दुरभाष पर बात कर प्रवीण की सफलता को लेकर बधाई दिया है. आईपीएस अधिकारी विकास वैभव ने कहा की प्रवीण ने जमूई जिला सहित पूरे बिहार एवं अपने देश का नाम रौशन किया है.उन्होंने कहा कि प्रवीण की रिजल्ट की खबर सुनकर काफी अच्छा लगा.आपने अपने बच्चों को काफी अच्छा संस्कार दिया है.आने वाली सभी पीढ़ियां भी इस तरह अपने देश का नाम रौशन करें.श्री वैभव ने कहा जितना गौरवान्वित आप महसूस कर रहे है निश्चित ही आपके परिवार और बच्चे भी कर रहे होंगे.प्रवीण जहां भी रहे सभी को गौरवान्वित करते रहे,ऐसी ही हमारी आप सभी के लिए शुभकामनाएं है.प्रवीण को जब भी कभी हमारी जरूरत हो निश्चित ही सहयोग मिलेगा.उनके उज्वल भविष्य की हम सभी कामना करते है.बता दे कि श्री विकास वैभव के आदेश पर पत्रकार बिधुरंजन उपाध्याय ने प्रवीण के घर पहुँचकर उनके माता-पिता से दूरभाष पर गृह विभाग के विशेष सचिव विकास वैभव से बात

बता दे की जमूई जिला के सुदूरवर्ती इलाके एवं लाल गलियारे के रूप में अपनी पहचान बना चुके चकाई प्रखंड मुख्यालय से महज आधे किलोमीटर पर स्थित चकाई बाजार निवासी प्रवीन वर्णवाल बचपन से ही मेधावी था। उसकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा झारखंड के देवघर जिला के जसीडीह स्थित रामकृष्ण विद्यालय से हुई थी.बाद में प्रवीण पटना से सीबीएससी से मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा पास की.उसने कानपुर आईआईटी से पढ़ाई कर दिल्ली में दो साल से यूपीएससी की तैयारी कर रहा था. उसने दूसरे प्रयास में यह सफलता हासिल की है.

प्रवीण की सफलता से उसकी मां वीणा देवी,बड़े भाई धनंजय वर्णवाल,बहन दीक्षा वर्णवाल एवं चाचा रामेश्वर लाल वणार्वाल खुशी से झूम रहे हैं.चकाई बाजार में मेडिकल दुकान चलाने वाले सीताराम वर्णवाल ने काफी गरीबी में अपने पुत्र प्रवीण को पढ़ाया-लिखाया और आज प्रवीण ने पूरे चकाई का नाम देश स्तर पर ऊंचा किया है। प्रवीण की मां वीणा देवी ने कहा कि प्रवीण सिर्फ मेरा बेटा ही नहीं पूरे जमुई जिला का बेटा है और उम्मीद है कि वह आगे चलकर समाज सेवा के साथ-साथ देश की भी सेवा करेगा.

शुभम बने यूपीएससी टॉपर, बनाया रिकॉर्ड, पिता का सपना किया पूरा

बिहार के लाल ने एक बार फिर कमाल किया है. बिहार के कटिहार जिले के शुभम कुमार ने यूपीएससी परीक्षा में टॉप किया और एक नया रिकॉर्ड बनाया है. सिविल सेवा परीक्षा 2020 में पहला स्थान पाने वाले शुभम कुमार ने आईआईटी बॉम्बे से बीटेक किया है.बता दें कि कटिहार जिले के निवासी शुभम को 2019 में 290 रैंक प्राप्त हुआ था.

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने सिविल सेवा परीक्षा-2020 का परिणाम घोषित कर दिया है। इसबार यूपीएससी परीक्षा में 761 अभ्यर्थी सफल हुए हैं। बिहार के कटिहार निवासी शुभम कुमार (रोल नं.1519294) ने देशभर में टॉप किया है। वहीं जागृति अवस्थी को दूसरी तो अंकिता जैन को तीसरी रैंक मिली है। वहीं बिहार के जमुई जिले चकाई बाजार निवासी सीताराम वर्णवाल के पुत्र प्रवीण कुमार ने सातवां स्थान हासिल किया है। यूपीएससससी सीएसई 2020 फाइनल रिजल्ट में कुल 25 अभ्यर्थियों ने टॉप किया है, जिसमें 13 पुरुष और 12 महिला अभ्यर्थी हैं। छात्र परिणाम शुभम ने आइआइटी बाम्बे से पढ़ाई की है। शुभम को वर्ष 2019 परीक्षा में आल इंडिया में 290 रैंक हासिल हुई थी। टॉपर शुभम ने एंथ्रोपोलॉजी वैकल्पिक विषय से इग्जाम दिया था। आइआइटी बॉम्बे से सिविल इंजीनियरिंग में बीटेक करने के बाद शुभम ने यूपीएससी की परीक्षा दी थी। वहीं जागृति अवस्थी ने एमएएनआइटी भोपाल से इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग में बीटे की डिग्री हासिल की है। जागृति ने वैकल्पिक विषय के रूप में समाजशास्त्र को चुना था। शुभम ने कहा कि अपने गांव को देखकर मुझे आइएएस बनने की प्रेरणा मिली।

यूपीएससी में बिहार के शुभम का जलवा, बने आल इंडिया आईएस टॉपर पिता बनाना चाहते थे इंजीनियर

बिहार की प्रतिभा पुरे देश में हमेशा से अब्बल रहा है और अगर सिविल सेवा एग्जाम की बात हो तो बिहार शुरू से ही अपने एक स्थान पुरे देश में रखता है इसी बिच अब बिहार के लाल ने एक बार फिर कमाल किया है. बिहार के कटिहार जिले के शुभम कुमार ने वढरउ परीक्षा में टॉप किया और एक नया रिकॉर्ड बनाया है जिसके बाद उनके परिवार में और गांव में खुशी की लहार दौर गई है।पिता बनाना चाहते थे इंजीनियरे आपको बता दू की बिहार के कटिहार कदवा प्रखंड के कुम्हडी गांव ने रहने वाले शुभम अपने इस इस मुकाम को पाने के लिए कई संघर्ष किया आपको बता दू की शुभम के पिता जी एक बैंक के मैनेजर है और शुभम सुरु से ही एक प्रतिभावान छात्र थे और शुरू से ही वह टॉपर रहे है आपको बता दू की उन्होंने आईआईटी बॉम्बे से बी.टेक (सिविल इंजीनियरिंग) में स्नातक किया है पढ़ाई की है शुभम लाखों युवाओं की प्रेरणा हैं. कटिहार के शुभम को क्अर टॉपर होने पर बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने भी बधाई दी उन्होंने ट्वीट कर के लिखा की वढरउ सिविल सेवा परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल करने पर बिहार के श्री शुभम कुमार को बधाई एवं शुभकामनाएं। उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना है। बिहार के विकास आयुक्त, श्री आमिर सुबहानी जी ने भी पूर्व में प्रथम स्थान प्राप्त किया था इसके साथ साथ उप मुख्य मंत्री तार किशोर प्रसाद ने भी बधाई दी है।

उन्होंने कहा कि यूपीएससी की तैयारी कहीं पर भी रहकर की जा सकती है। मेरी सफलता में परिवार का बड़ा सहयोग है। वहीं शुभम की मां ने कहा कि बेटे ने आज देश में नाम रोशन कर दिया है। शुभम बचपन से ही टॉपर है। शुभम की मां ने कहा कि उसके पिता आइएएस बनना चाहते थे, वो नहीं बन सके तो बेटे ने सपना पूरा कर दिया। बता दें कि सिविल सेवा मुख्य परीक्षा का आयोजन जनवरी 2021 में किया गया था। इसमें सफल अभ्यर्थियों का इंटरव्यू अगस्त-सितंबर 2021 में पूरा हुआ था। साक्षात्कार के बाद जिनका चयन किया गया है, उनका नाम वेबसाइट पर जारी कर दिया गया है। इस वर्ष आइएएस के लिए 180, आइएफएस के लिए 36 और आइपीएस के लिए 200 सीटें सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त सेंट्रल सर्विस ग्रुप एक में 302, ग्रुप बी सर्विस में 118 पद सुरक्षित है।

यूपीएससी में परचम लहराने वाले चकाई के प्रवीण के परिजनों से चकाई विधायक सह मंत्री सुमित सिंह ने दूरभाष से किये बात,दी शुभकामनाएं

बिधुरंजन उपाध्याय

चकाई/जमुई-बिहार के जमुई जिला के चकाई बाजार निवासी सीताराम वर्णवाल के पुत्र प्रवीण कुमार ने परचम लहराया है। उन्हें सातवा स्थान मिला है। रिजल्ट जारी होते ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया.प्रवीण की सफलता से पूरे चकाई बाजार में जश्न का माहौल है। उसके घर पर बधाई देने वालों की भीड़ उमड़ रही है।

इस मौके पर चकाई विधायक सह बिहार सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह ने प्रवीण के पिता सीताराम वर्णवाल एवं उनकी माता वीणा देवी से दुरभाष पर बात कर प्रवीण की सफलता को लेकर बधाई दिया है.मंत्री सुमित सिंह ने कहा की वो बिहार से बाहर दिल्ली में है.बहुत जल्द चकाई आकर प्रवीण के घर जाएंगे.प्रवीण भी अभी दिल्ली में ही है.श्री सिंह ने कहा की हमारे विधानसभा क्षेत्र चकाई के प्रवीण ने यूपीएससी में सफलता हासिल कर हम सभी को गौरवान्वित किया है.उनके उज्वल भविष्य की हम सभी कामना करते है.बता दे कि मंत्री सुमित सिंह के निर्देश पर उनके कार्यकर्ता अमित तिवारी उर्फ गुलटू प्रवीण के घर पहुँचकर उनके माता-पिता से दूरभाष पर बात कराया.

बता दे की प्रवीन बचपन से ही मेधावी था। उसकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा जसीडीह स्थित रामकृष्ण विद्यालय से हुई थी। बाद में उसने पटना से सीबीएससी से मैट्रिक एवं इंटर की परीक्षा पास की। उसने कानपुर आईआईटी से पढ़ाई कर दिल्ली में दो साल से यूपीएससी की तैयारी कर रहा था। उसने दूसरे प्रयास में यह सफलता हासिल की है।

प्रवीण की सफलता से उसकी मां वीणा देवी ,बड़े भाई धनंजय वर्णवाल, बहन दीक्षा वर्णवाल एवं चाचा रामेश्वर लाल वणार्वाल खुशी से झूम रहे हैं। चकाई बाजार में मेडिकल दुकान चलाने वाले सीताराम वणार्वाल ने काफी गरीबी में अपने पुत्र प्रवीण को पढ़ाया- लिखाया और आज प्रवीण ने पूरे चकाई का नाम देश स्तर पर ऊंचा किया है। प्रवीण की मां वीणा देवी ने कहा कि प्रवीण सिर्फ मेरा बेटा ही नहीं पूरे जमुई जिला का बेटा है और उम्मीद है कि वह आगे चलकर समाज सेवा के साथ-साथ देश की भी सेवा करेगा।

यूपीएससी की सिविल सर्विसेज परीक्षा में टॉप करने वाले बिहार के शुभम कुमार का कटिहार जिले में उनके पैतृक गांव कुमरिही में भव्य स्वागत किया गया

संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विसेज परीक्षा में टॉप करने वाले शुभम कुमार कटिहार जिले के कदवा पहुंचे तो उनके पैतृक गांव कुमरिही में उनका भव्य स्वागत किया गया है.स्वागत के बाद गांव के मंच से जब यूपीएससी टॉपर ने अपनी बात रखी तो मानो उन्होंने बता दिया "बिहारी और बिहारीयत" क्या होता है,वैसे तो उन्होंने मंच से सभी बच्चों को अपनी मातृभाषा के साथ सभी भाषा में दक्षता हासिल करने का सुझाव दिया.साथ ही उन्होंने यह भी बता दिया क्यों "एक बिहारी सब पर भारी" है.

फिलहाल, देश के सबसे कठिन माने जाने वाले यूपीएससी एग्जाम में अपनी प्रतिभा के दम पर डंका बजाने वाले बिहारी के कटिहार निवासी शुभम ने वाकई साबित कर दिया एक बिहारी आखिर कैसे सब पर भारी है.

शुभम ने कहा कि जब मैं अपनी ट्रेनिंग एकेडमी में गया तो वहीं पर सभी यूपीएससी क्रैक किए हुए लोग बैठे थे. उन्होंने मुझे पूछा कि शुभम तुम हिंदी क्यों बोलते तो तुम्हारी मातृभाषा क्या है. मैंने कहा कि अपनी मातृभाषा मैंने कभी सीखी ही नहीं. वहां बैठे लोगों के लिए हिंदी दूसरी भाषा थी उसके अलावा उनकी कोई न कोई मातृभाषा थी, जिस पर वे गर्व करते हैं. मेरा यह कहना है कि हमें अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए.उन्होंने कहा कि जहां भी मैं गया वहां पर शुरूआत में लोग बोलेंगे एक बिहारी है, लेकिन धीरे-धीरे उनको यकीन हो गया कि एक बिहारी क्या कर सकता है. मेरा कहना है कि आपको अपने पर विश्वास होना चाहिए.

बता दें कि बिहार के शुभम कुमार ने प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा, 2020 में शीर्ष स्थान हासिल किया है. वहीं मध्यप्रदेश की जागृति अवस्थी ने दूसरा स्थान हासिल किया. संघ लोक सेवा आयोग शुक्रवार को परीक्षा के परिणाम जारी किए. परीक्षा में कुल 761 उम्मीदवार उत्तीर्ण हुए हैं जिनमें 545 पुरुष और 216 महिलाएं हैं और आयोग ने विभिन्न सिविल सेवाओं के लिए उनके नामों की अनुशंसा की है.

यूपीएससी परीक्षा में बिहार के छात्र कई बार कर चुके हैं टॉप

1987 बैच के टॉपर आमिर सुबहानी अभी हैं बिहार के विकास आयुक्त

आमिर सुबहानी के बाद पटना के प्रशांत ने 1988 में किया था टॉप

1996 बैच के टॉपर सुनील कुमार बाद में चले गए झारखंड कैडर में

2000 के टॉपर आलोक झा ने विदेश सेवा में जाना चुके थे

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) में बिहार की प्रतिभाओं का परचम लहराता रहा है.आज भी देश के लगभग राज्यों में बिहार के आईएएस और आईपीएस अधिकारी कार्यरत हैं.पिछले कई वर्षों से यूपीएससी में बिहार के छात्र टॉप नहीं कर रह पा रहे थे.इस सूखे को 20 वर्ष बाद बिहार राज्य के कटिहार के शुभम कुमार ने खत्म किया है. यूपीएससी की परीक्षा में बिहार के छात्र कई दफे टॉपर रहे हैं.वर्ष 1987 बैच के टॉपर आमिर सुबहानी अभी बिहार के विकास आयुक्त हैं.इसके

अगले ही वर्ष यानी 1988 में पटना के ही रहनेवाले प्रशांत ने यूपीएससी की परीक्षा में टॉप किया था.हालांकि,उन्होंने बिहार की जगह पश्चिम बंगाल कैडर ले लिया। बाद में उन्होंने आईएएस की नौकरी छोड़ दी.अभी वह वर्ल्ड बैंक में कार्यरत हैं। इसके बाद बिहार को यूपीएससी में टॉपर के लिए 8 साल का इंतजार करना पड़ा.वर्ष 1996 में बिहार के ही सुनील कुमार बर्णवाल यूपीएससी में टॉपर बने.बाद में वह झारखंड कैडर में चले गए और अभी वहीं पदस्थापित हैं.

बेलारूस के राजदूत हैं आलोक झा

सुनील कुमार बर्णवाल के बाद आलोक झा साल 2000 में यूपीएससी की परीक्षा में टॉप पर रहे.बिहार के रहनेवाले आलोक झा ने आईएएस की नौकरी करने के बजाए भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) में योगदान किया। बताया जाता है कि वह अभी बेलारूस में भारत के राजदूत हैं.आलोक झा के बाद बिहार को यूपीएससी टॉपर के लिए लम्बा इंतजार करना पड़ा.आखिरकार 20 साल बाद कटिहार के शुभम कुमार ने यूपीएसी में टॉप करने के साथ देश में एक बार फिर बिहार का परचम लहरा दिया.

बांका जिला के फागा गांव की बेटी भावना दूबे ने पायी यूपीएससी में सफलता

मौसा के घर देवघर में पढ़ाई कर पाई सफलता

बांका जिला के बौंसी प्रखंड के फागा गांव में आज ग्रामीणों के बीच जश्न का माहौल है.गांव की बेटी भावना कुमारी उर्फ पायल दूबे ने यूपीएससी की परीक्षा में 376वां रैंक लाकर न सिर्फ अपने परिवार का नाम रौशन किया है बल्कि पूरे गांव को गौर्वान्वित करने का काम किया है.फागा गांव संतों की भूमि रही है। चैतन्य महाप्रभु जैसे संत के कदम भी इस गांव में पड़ चुके हैं। गांव के स्व. सुनील दुबे की इकलौती संतान भावना कुमारी उर्फ पायल ने यूपीएससी में सफलता अर्जित किया है। महज 5 साल की उम्र में उनके पिता का निधन हो गया था। उसके बाद उनकी मां नीलम देवी ने अपनी संतान को पढ़ाने की ठान ली और भावना को लेकर महज 5 वर्ष की आयु में ही उसके मौसा के पास झारखंड के देवघर जिला के जसीडीह के बाघमारा गांव चली गई। वहीं रहकर सेंट फ्रांसिस हाई स्कूल से पढ़ाई करने के बाद करने के बाद देवघर गर्ल्स कॉलेज से अंग्रेजी में स्नातक किया। इसके बाद 3 साल की कठिन मेहनत कर अपने घर में ही रहकर यूपीएससी को क्रैक किया। परीक्षा परिणाम में प्रथम प्रयास में ही सफलता पायी भावना को 376वां रैंक प्राप्त हुआ है। भावना ने अपनी सफलता का सारा श्रेय अपनी मां नीलम देवी एवं मौसा अरुण कुमार मिश्र को दिया है। इधर परीक्षा परिणाम की जानकारी होते ही भावना के पैतृक गांव फागा में घर पर मौजूद उनके चाचा सुशील दुबे, चाची रश्मि कुमारी(शिक्षिका) सहित पड़ोसी मिंटू दुबे एवं अन्य डीजे बजा कर व अबीर गुलाल लगाकर खुशी का इजहार कर रहे थे। चाची रश्मि कुमारी ने बताया कि जल्द ही भावना फागा गांव आएगी और उनका भव्य स्वागत किया जाएगा।

भावना की सफलता से देवघर गौरवान्वित : सांसद

यूपीएससी में सफलता प्राप्त करने वाली भावना कुमारी से मिलने सांसद डा. निशिकांत दुबे देवघर जिला के जसीडीह के बाघमारा स्थित घर पहुंचकर उन्हें सफलता पर बधाई दी। सांसद ने कहा कि मध्यम वर्गीय परिवार के लिए ऐसी सफलता किसी सपने से कम नहीं है। आज के परिवेश में अभिभावक में एक धारणा बनी हुई है कि बच्चों को शिक्षा केवल अच्छे संस्थान में पढ़ने से ही मिल सकता है। इस भ्रम को भावना ने तोड़कर दिखा दिया। बताया कि भावना ने संत फ्रांसिस स्कूल जसीडीह से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके बाद इंटर व स्नातक बाजला कालेज से करने के बाद देवघर महाविद्यालय से मास्टर डिग्री तक की पढ़ाई बिना कोचिग का सहारा लिए की। उनकी सफलता पर ना केवल उनके स्वजनों व समाज को बल्कि पूरे देवघरवासियों को गर्व है। सांसद ने कहा कि भावना की सफलता से युवाओं को प्रेरणा लेने की जरूरत है। कोई भी व्यक्ति किसी काम को दिल से करे तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

बिहार लोकसेवा आयोग में गौरव बना टॉपर

टॉप टेन में दो महिलाएं भी शामिल

टॉपर के लिए बिहार और यूपी दोनों प्रदेश में जश्न

अखिलेश कुमार

बिहार लोकसेवा आयोग के 65वीं परीक्षा के परिणाम में गौरव सिंह टॉपर रहे। जबकि टॉप टेन में दो महिलाएं भी शामिल है। बीपीएससी 65वी परीक्षा में दुसरे स्थान पर बांका की चंदा भारती, तीसरे पर नालंदा के वरूण कुमार, चौथा मधुबनी के सुमित कुमार, पांचवा समस्तीपुर के अविनाश कुमार सिंह, छठा झारखंड के आदित्य श्रीवास्तव, सातवां मोतिहारी के एस प्रतिक, आठवां भोजपुर के आदित्य कुमार, नौवा गोपालगंज की अनामिका तथा दसवां स्थान भागलपुर के अंकित कुमार प्राप्त करने सफलता हासिल की है।

गौरव सिंह ने बिहार लोकसेवा आयोग के 64वीं परीक्षा में भी सफलता हासिल की है, लेकिन रैंक अच्छा नहीं है। वे रोहतास जिले के शिवसागर प्रखंड अन्तर्गत चमरहां गांव के निवासी हैं। हालाकि उनका पैतृक गांव उत्तर प्रदेश के चंदौली जिला अन्तर्गत जेसरी है। लेकिन उनकी शशिकला सिंह अपने मायके चमरहां में हीं बेटे को लेकर अपने माता-पिता के साथ रहती हैं और यही शिक्षिका है। गौरव के मनोज कुमार सिंह वायुसेना में तैनात थे जिनका देहान्त दो दशक पूर्व हीं हो चुका है।

गौरव सिंह की प्राथमिक शिक्षा गांव के हीं प्राथमिक विद्यालय में हुआ था। इसके बाद उनका चयन सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल वाराणसी में हो गया। वहां से बारहवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने ओडिसा के कालिंदा से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। और फिर पुणे में जॉब करने लगे। हालांकि उनके निशाने पर लोक सेवा आयोग की सफलता रहा है। 64 वीं बिहार लोकसेवा आयोग के परीक्षा में भी गौरव सिंह सफल रहे थे, लेकिन अपने रैंक से संतुष्ट नहीं थे। 65वीं परीक्षा में टॉपर बनने के बाद चर्चित बिहार पत्रिका से बातचीत करते हुए गौरव ने कहा उन्हे सफलता हासिल करने की उम्मीद तो थी, लेकिन बिहार टॉपर बनेंगे, यह उम्मीद नहीं थी। रिजल्ट में टॉपर होने की सूचना अपने मां को फोन पर दी तो माँ के आंखों से खुशी के आंसू छलकने लगा। गौरव के टॉपर होने की सूचना के बाद रोहतास जिले के चमरहां के साथ ही उत्तर प्रदेश के जेसरी गांव में भी लोग जश्न मनाने लगे। गौरव कहते हैं कि इस सफलता से हमें काफी खुशी हुई है, लेकिन यह अन्तिम मंजिल नहीं है। उनका उद्देश्य यूपीएससी में सफलता हासिल करना है

बिहार विधानसभा उपचुनाव, महागठबंन में पड़ा गांठ कॉग्रेस-राजद में बढ़ी दूरी, सहयोगी दल पसोपेश में

अखिलेश कुमार

देश में खाली पड़े लोकसभा के 3 तथा विधानसभा सभा 30 सीटों पर उप चुनाव की प्रक्रिया आरंभ हो गया है। इसमें बिहार विधानसभा के कुशेश्वरनाथ तथा तारापुर ये दो सीट शामिल है। कुशेश्वरनाथ शशिभूषण हजारी तथा तारापुर की सीट मेवालाल चौधरी की मौत के बाद खाली पड़ा था। उपचुनावों में बिहार राजाग गठबंधन पुरी तरह मजबूती के साथ मैदान में उतरा है जहाँ दोनों सीटों पर जदयू ने प्रत्याशी दिया है और भाजपा समर्थन कर रहा है। कुशेश्वरनाथ से अमन भूषण चौधरी तथा तारापुर की सीट से राजीव कुमार सिंह मैदान में जदयू के टिकट पर उतरे हैं।

वहीं दूसरी तरफ महागठबंन में उम्मीदवार को लेकर घमासान मचा हुआ है। महागठबंन में बात नहीं बनने पर दोनों प्रमुख घटक दल राजद और कॉग्रेस ने अपने अपने उम्मीदवारों के नामों की सूची जारी कर दिया है। पहले राजद ने तारापुर की सीट से अरूण कुमार साह तथा कुशेश्वरनाथ से गणेश भारती के नाम की घोषणा कर दी। इससे नाराज कॉग्रेस ने गठबंधन धर्म का पालन नहीं करने तथा राजद पर मनमानी करने का आरोप लगाया। राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने अपने उम्मीदवारों की सूची जारी करने के बाद कहा था कि कॉग्रेस से बातचीत हो रही है, लेकिन कॉग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मदनमोहन झा और विधायक दल के नेता अजीत शर्मा ने कहा कि हमें विश्वास में लिए वगैर राजद ने सूची जारी कर दिया है। कुशेश्वरनाथ को कॉग्रेस अपना परम्परागत सीट मानते हुए कहा कि यहां से मेरा उम्मीदवार होना चाहिए। लेकिन राजद ने जब कॉग्रेस के मांग को नजरअंदाज किया तो कॉग्रेस ने भी दोनों सीटों पर अपने उम्मीदवार की सूची जारी कर दिया है। तारापुर से राजेश मिश्रा और कुशेश्वरनाथ नाथ से अतिरेक कुमार को उम्मीदवार बनाया है। अपने उम्मीदवारों की सूची जारी करने के बाद कॉग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मदनमोहन झा ने कहा कि हमारा केन्द्रीय ने इसे गंभीरता से लिया है और अपनी प्रतिष्ठा मानकर हम इस उप चुनाव में पुरी ताकत के साथ सफलता भी हांसिल करेंगे।

चाचा चलाएं सिलाई मशीन और भतिजा उड़ाए हेलिकॉप्टर

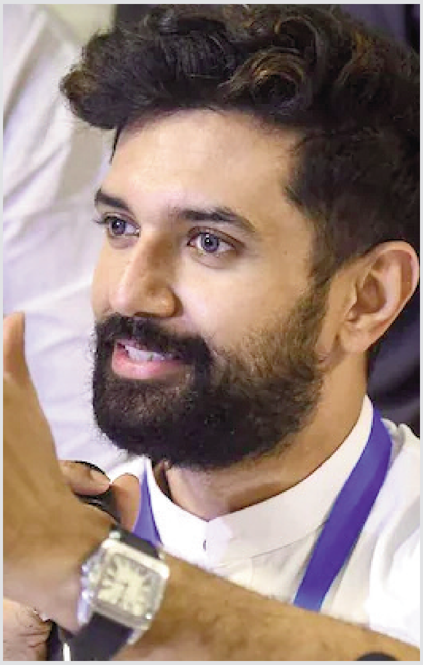

दलित नेता रामविलास पासवान ने यह कभी कल्पना भी नहीं किया होगा कि लम्बे राजनीतिक संघर्ष के बाद उन्होंने जो बड़ी राजनीतिक विरासत खड़ी की है और उस विरासत को परिवार मोह के बंधन में जकड़ रखा है वही जकडन हमारे र्प्थम पुण्यतिथि मनाने से पहले ही विरासत को छिन्न-भिन्न करने पर आमदा हो जाएगा तथा उनके दल का चुनाव चिन्ह तक फ्रिज हो जाएगा। चिराग पासवान और पशुपति नाथ पारस के बीच लोक जनशक्ति पार्टी तथा उसके चुनाव चिन्ह को लेकर चल रहे घमासान के बीच चुनाव ने रामविलास पासवान द्वारा खड़े किये गये पार्टी तथा जनता के बीच पहचान बना चुके चुनाव चिन्ह दोनों को चुनाव आयोग ने फ्रिज कर दिया। अब चिराग गुट लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के नाम से जाना जाएगा तथा उसके लिए हेलिकोप्टर चुनाव चिन्ह आवंटित किया गया है तो पारस गुट अब राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी कहलाएगा तथा उस गुट के लिए चुनाव आयोग ने चुनाव चिन्ह सिलाई मशीन आवंटित किया है। चाचा भतिजा व घर परिवार का आपसी कलह तथा अति राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने रामविलास पासवान के राजनीतिक को संभाल कर आगे बढाने के बदले पराभव के ओर ले जा रहा है।

दो सीटों को लेकर महागठबंन में गांठ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। दोनों प्रमुख घटक दल इन सीटों पर अपनी अपनी स्थिति को मजबूत बताने की कोशिश कर रहे हैं। राजद का मानना है कि कॉग्रेस के पास कोई खास वोट बैंक नहीं है और वह दबाव की राजनीति कर अधिक सीटें पिछले विधानसभा चुनाव में ले तो ली, लेकिन अधिकांश पर पराजय का मुंह देखना पड़ा। और इसीलिए महागठबंन की सीटें भी कम आई, अगर कॉग्रेस कम सीटों पर मैदान में उतरती तथा राजद ज्यादा सीटों पर लडता तो बिहार विधानसभा चुनाव 2020 का परिणाम महागठबंन के लिए बेहतर होता।

दरअसल वर्तमान बिहार विधानसभा का उप चुनाव परिणाम से भले ही सरकार के सेहत पर कोई असर नहीं पड़ेगा, लेकिन अब इस उप चुनाव का परिणाम कई में दूरगामी प्रभाव वाला सिद्ध होगा।महागठबंन में पड़ी दरार और चल रहे तकरार को भाजपा जदयू गठबंधन अपने लिए शुभ संकेत मान रहा है और दोनों के बीच विपक्षी मतदाताओं के विभाजन की संभावना से अपनी जीत सुनिश्चित मानकर चल रहा है। तो वही दूसरी कॉग्रेस के लिए अब यह चुनाव जीवन मरण का विषय बन गया है। उप चुनाव में कॉग्रेस उम्मीदवारों को यदि करारी हार मिली और राजद को जीत हासिल होती है अथवा कांटे का टक्कर भी देता है तो यह बिहार कॉग्रेस के भविष्य के बड़ा आघात होगा। परन्तु कहीं कॉग्रेस उप चुनाव की एक भी जीतने अथवा दोनों सीटों पर मुख्य मुकाबला में भी आ जाता है तो राजद के लिए बड़ा झटका होगा और कॉग्रेस को दरकिनार करने पर उसे सौ बार सोचना पडेगा। महागठबंन के दोनों प्रमुख घटक दलों द्वारा अपने अपने उम्मीदवार की सूची जारी करने के बाद अब उसके अन्य सहयोगियों यानि भाकपा, माकपा और माले जैसे दलों के नेता दुविधा में पड़ गये हैं कि हम समर्थन करें तो किसका करें? कुल मिलाकर भले ही बिहार के दो सीटों पर हो रहे उप चुनाव वर्तमान राजनीति पर असर न डाले, लेकिन इतना तय है कि इसका परिणाम भविष्य की राजनीति के दिशा और दशा तय करने के लिए स्पष्ट संकेत जरूर दे देगा।

निराश होते बिहारी युवाओं में ज्ञान भरने की मुहिम है ‘Let’s Inspire Bihar

‘Let’s Inspire Bihar क्या है,यह जानने से पहले आप खुद से यह सवाल करें कि क्या आप मानते हैं कि संपूर्ण भारतवर्ष के उज्ज्वल भविष्य की प्रबल संभावनाएं कहीं न कहीं उसी भूमि में समाहित हो सकती हैं जिसने इतिहास के एक कालखंड में संपूर्ण अखंड भारत के साम्राज्य का नेतृत्व किया था और वह भी तब जब न आज की तरह संचार के माध्यम थे, न सोशल मीडिया जैसी तीव्रता की यहां खबर डाली झट पूरी दुनिया में खबर पहुंच गई. न विकसित मार्ग और न प्रौद्योगिकी.

आप खुद से सवाल कीजिए और दीमाग पर जोर डालिए तो आपको याद आएगा कि बिहार ही ज्ञान की वह भूमि है जहां वेदों ने भी वेदांत रूपी उत्कर्ष को प्राप्त किया, ज्ञान के प्राचीन बौद्धिक परंपरा की जब अभिवृद्धि हुई तब इसी भूमि ने बौद्ध और जैन धर्मों के दर्शन सहित अनेक तत्वों एवं सिद्धांतों के जन्म के साथ नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना देखी.

जहां ज्ञान की ऐसी अद्भुत प्रेरणा रही, वहां शौर्य का दिखना भी स्वाभाविक ही था. इतिहास गवाह है वह बिहार ही है जहां से अखंड भारत पर शासन चलाया जाता था और वह भी सशक्त एवं जोरदार तरीके से. उद्यिता(जहां से नए नए तरह के व्यवसाय) की इस प्राचीन भूमि ने ही ऐतिहासिक काल में ऐसी प्रेरणा का संचार किया जिसके कारण दक्षिण पूर्वी एशिया के नगरों तथा यहां तक कि राष्ट्रों का नामकरण भी इसी भूमि के प्रेरणादायक नगरों के नामों पर होने लगे, जिसका सबसे सशक्त उदाहरण वियतनाम है जो चंपा (वर्तमान भागलपुर, बिहार) के ही नाम से लगभग 1500 वर्षों तक पूरी दुनिया में जाना गया.

सोचिए और खुद ही जवाब दीजिए कि बिहार के ऐसे इतिहास और सामर्थ्यवान यशस्वी पूर्वजों के वशंज हम क्या मौजूदा समय में भारत के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अपना सकारात्मक योगदान दे पा रहे हैं?

लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में रहे यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने अपने ग्रंथ इंडिका में तत्कालीन पाटलिपुत्र को उस समय के विश्व के सर्वश्रेष्ठ नगर के रूप में इसका वर्णन किया था. आप कल्पना कीजिए कि यदि उस समय किसी पाटलिपुत्र निवासी से 2500 वर्ष बाद इसके स्वरूप के संबंध में पूछा जाता तो भला किस प्रकार का आशा से भरा उत्तर मिलता और क्यों वह स्वाभाविक भी लगता.लेकिन अगर आज की बात करें और आज को देखें और जब भी भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखकर बिहार के युवाओं से बातचीत होती है, तब मुझे ऐसा क्यों महसूस होता है कि कहीं न कहीं या यूं कहें चारों तरफ एक प्रकार की निराशा है.

भविष्य के संबंध में भी नकारात्मक विचार ही युवाओं के बीच पनप रहे हैं,जो भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए ठीक नहीं है

क्यों युवाओं में निराशा फैल रही है

जिस भूमि ने प्राचीनतम काल में ही कई कई कीर्तिमानों को प्राप्त किया था, यदि वह वैसे ही धीरे धीरे अपनी स्वाभाविक प्राकृतिक वृद्धि करता रहता या उसकी वृद्धि हुई होती तो निश्चित ही आज का स्वरूप बहुत अलग होता.और इसी कड़ी में अगर हम भविष्य की संभावनाओं के बारे में इन्हीं युवाओं से पूछते तो

उनके जवाब आशाओं से लबरेज होते.

अब बड़ा सवाल बार बार ये उठता है कि बाद के समय में ऐसा क्या होता गया जिसके कारण जो आशावादिता उस काल में स्पष्ट और साफ साफ दिखाई देती थी, वह आज के युवाओं की कोशिशों पर ही नहीं बल्कि उनके प्रश्न करने पर भी नहीं नजर आती?

आखिर ऐसा क्यों है कि जिस क्षेत्र में कभी पूरी दुनिया के विद्वान अध्ययन के लिए दुर्गम मार्गों से सुदूर यात्राएं कर पहुंचने के लिए लालायित रहते थे, वहीं के विद्यार्थी आज परिश्रम एवं पुरुषार्थ के मार्गों से कई अवसरों पर नदारद दिखते हैं. साथ ही कई क्षेत्रों में अध्ययन एवं जीवनयापन के लिए प्रयासरत रहते हैं?

अब जरूरत है ये जानने की इससे कैसे निपटा जाए

मैं यहां कहना चाहता हूं कि चिंतन करने से ही समाधान मिलेगा. चूंकि भूमि वही है, उर्जा भी वही है. इसमें कोई संदेह भी नहीं है कि हम उन्हीं यशस्वी पूर्वजों के वंशज हैं जिनकी प्रेरणा आज भी मन को उद्वेलित करती है जोश से भर देती है और कहती है कि यदि संकल्प सुदृढ़ हो तो इच्छित परिवर्तन अपने माध्यम खुद ही तय कर लेते हैं.

यदि हम इतिहास में प्राप्त उत्कर्ष के कारणों पर चिंतन करेंगे तो पाएंगे कि हमारे पूर्वज दूर की सोचते थे. उर्जा के साथ जिज्ञासा तो हमारे पूर्वजों की ऐसी थी जो सामान्य भौतिक ज्ञान से संतुष्ट होने वाली नहीं थी. वह सत्य के वास्तविक स्वरूप को जानना चाहते थे जिसके कारण ज्ञान परंपरा के उत्कर्ष को समाहित किए उपनिषदों की दृष्टि संभव हो सकी.

यदि भूमि के ऐतिहासिक शौर्य के कारणों पर हम चिंतन करें तो वहां भी बृहत्ता के लक्षण तब स्पष्ट होते हैं जब हम महाजनपदों के उदय के क्रम में पाटलिपुत्र में महापद्मनंद के राज्यारोहण को याद करते हैं.

चूंकि जिस समय अन्य जनपदों में जहां पूर्व से स्थापित शासक वर्ग के अतिरिक्त किसी अन्य वर्ग से संबद्ध शासक की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, मगध में केवल सामर्थ्य को ही कुशल शासकों हेतु उपयुक्त लक्षणों के रूप में स्वीकृति प्राप्त हुई थी. ऐसे चिंतन के कारण ही मगध का सबसे शक्तिशाली महाजनपद के रूप में उदय हुआ जिसने कालांतर में साम्राज्य का रूप ग्रहण कर लिया.

उत्कृष्ट चिंतन के कारण जहां राजतंत्र के रूप में मगध का उदय हुआ, वहीं वैशाली में गणतंत्र की स्थापना भी हुई. यदि कालांतर में ऐसे शौर्य का क्षय हुआ तो उसके कारण शस्त्र और शास्त्र में समन्वय का अभाव ही रहा. इतिहास गवाह है कि भले ही शास्त्रीय ज्ञान अपने चरम उत्कर्ष पर क्यों न हो, यदि शस्त्रों के सामर्थ्य में कमी आती है तो उत्कृष्ट (बेहतरीन) शास्त्र भी नष्ट हो जाते हैं.

यदि समय के साथ में हमारा अपेक्षाकृत विकास नहीं हुआ और यदि हम पुराने समय को पार करते हुए वर्तमान में वैसा तारतम्य अनुभव नहीं करते तो इसका कारण कहीं न कहीं समय के साथ लघुवादों (हमारी संकीर्ण सोंच) अथवा अतिवादों से ग्रसित होना ही रहा है, नहीं तो जिस भूमि ने इतिहास के उस काल में कभी महापद्मनंद को शासक के रूप में सहर्ष स्वीकार जन्म विशेष के लिए नहीं परंतु उनकी क्षमताओं पर विचारण के उपरांत किया था, उसके उज्ज्वलतम भविष्य में भला संदेह कहां था.

यदि वर्तमान में हम विकास में अन्य क्षेत्रों से कहीं पिछड़े हैं और अपने भविष्य को उज्ज्वल देखना चाहते हैं तो आवश्यकता केवल और केवल अपने उन यशस्वी पूर्वजों का स्मरण करते हुए लघुवादों (छोटी ओछी हरकतों से अलग) तथा जातिवाद, संप्रदायवाद इत्यादि से ऊपर उठकर राज्य एवं राष्ट्रहित में चिंतन करने की है. भविष्य के दृष्टिकोण को मन में स्थापित करते हुए अपने सामर्थ्य के अनुसार थोड़ा ही सही लेकिन निस्वार्थ भाव से सामाजिक योगदान करने की. जरूरत है एक वैचारिक क्रांति की जो युवाओं के बीच प्रसारित हो और जो भविष्य निर्माण के संगठित रूप में संकल्प ले और आगे बढ़ें.

परिवर्तन प्रकृति का नियम है. जरूरत आशा से लबरेज होकर आगे बढ़ने की है. जिस भूमि ने वैदिक काल से ही गार्गी वाचक्नवी एवं मैत्रेयी जैसी विदुषियों को नारी में भी समाहित विद्वता का प्रतिनिधित्व करते देखा हो, उसका भविष्य भला उज्ज्वल क्यों न हो?

आगे का रास्ता

अब यदि इस पर चर्चा करें कि 'Let's Inspire Bihar' के तहत करना क्या है तो वह भी स्पष्ट करता हूं

1. अपनी समृद्ध विरासत तथा स्वयं की क्षमता को जानिए एवं समझिए.

2. मानवीय क्षमता के चरमोत्कर्ष की चर्चा करते हुए मैंने उपनिषदों के अत्यंत प्रेरणादायक एवं महत्वपूर्ण श्लोक को अनेक अवसरों पर उद्धृत किया है जिसमें यह वर्णन मिलता है कि पूर्ण को खंडित करने पर भी हर खंड पूर्ण ही रहता है और पुनः पूर्ण में ही विलीन हो जाता है, अर्थात हर आत्मा जो परमात्मा का ही अंशरूप है उसमें उसके सभी गुण समाहित हैं.

**'ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते .
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वसिष्यते ..'**

ऐसे में युवा मन में अपने सामर्थ्य के प्रति किसी प्रकार का संदेह न हो इसके लिए यह अनुभूति आवश्यक है कि ईश्वर (पूर्ण) की वह असीम शक्ति सभी के अंदर पूर्णतः समाहित है और सदैव सही मार्गदर्शन के लिए तत्पर भी है. ऐसे में कहीं और न देखकर यदि हम एकाग्रचित्त होकर गहन आत्मचिंतन करेंगे तो सभी के लिए खुद मार्गदर्शक तथा इच्छित परिवर्तन के प्रबल वाहक बन जाएंगे.

3. यह समझना होगा कि स्वयं के सामर्थ्य को जाने बिना जब कई बार दूसरों के अनुसरण के कारण हम अपने मूल्यों से दिग्भ्रमित हो जाते हैं, तब हमारा अपनी मूल क्षमताओं से विश्वास डिग जाता है, जो बिल्कुल अनुचित है.

4. यह समझना होगा कि यदि हम प्रतिकूल परिस्थितियों में निराश होते हैं तो हम युवावस्था में समाहित उस असीम उर्जा के स्रोत से संभवतः स्वतः विच्छिन्न होते जाते हैं जिसके मूल में आशावादिता एवं सकारात्मकता सन्निहित है.

5. यदि अपने पूर्वजों के कृतित्वों से आप प्रेरित हैं और स्वयं की असीमित क्षमताओं के विषय में स्पष्ट हैं तो केवल स्वयं तक सीमित मत रहिए, इस अद्भुत प्रेरणा का प्रसार कीजिए.

6. लघुवादों तथा जातिवाद, संप्रदायवाद, लिंगभेद आदि संकीर्णताओं से परे उठकर बिहार तथा भारत के उज्ज्वलतम भविष्य के निर्माण हेतु बृहत चिंतन करें तथा दूसरों को भी प्रेरित करें.

7. प्रेरित युवा संगठित होने का प्रयास करें जिससे नकारात्मकता के विरुद्ध युद्ध के लिए संकल्पित सकारात्मक विचारों की शक्ति प्रबल हो उठे. संगठन को बृहत स्वरूप प्रदान करने के लिए 'Let's Inspire Bihar' के जिलावार चैप्टरों से सोशल मीडिया एवं भौतिक माध्यमों से जुड़ें जिनकी स्थापना आपके जिले के प्रेरित युवा समन्वयकताओं द्वारा की जा रही है.

बिहार के सभी जिलों के युवाओं और अप्रवासी बिहारवासियों के लिए भी प्रारंभ में सोशल मीडिया के माध्यमों के जरिए ही चैप्टरों को प्रारंभ किया जा रहा है जिनसे जुड़ने के लिए आप अपने जिले या नगर से संबंधित फेसबुक पेज से जुड़ सकते हैं या 'letsinspirebihar@gmail.com पर अपना नाम, उम्र, जिला का नाम और फोन नंबर के साथ ई-मेल कर सकते हैं ताकि आपके क्षेत्र से संबंधित समन्वयकर्ता आपसे संपर्क कर सकें.

8. प्रेरित युवाओं के साथ अपने व्यस्त समय में से कुछ समय सकारात्मक सामाजिक गतिविधियों के निमित्त चिंतन एवं योगदान हेतु भी समर्पित करें.

9. जो लघुवादों से ग्रसित हैं तथा दिग्भ्रमित हो रहे हैं उनके मार्गदर्शन हेतु अपने स्तर से भी प्रयास करें. उन्हें समझाने का प्रयास करें कि यदि व्यक्ति अपने वास्तविक सामर्थ्य को जान लें तथा सफलता प्राप्त करने के निमित्त अत्यंत परिश्रम करे तो कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं रह जाता.

मिलकर, हम निश्चित ही राष्ट्रहित में अपने जीवन में कुछ उत्कृष्ट योगदान समर्पित कर सकते हैं.

10. सकारात्मक विचारों एवं प्रेरणादायक उदाहरणों को सोशल मीडिया पर 'Let's Inspire Bihar हैशटैग के साथ साझा करें.

सकारात्मक चिंतन ही एकमात्र विकल्प

भविष्य परिवर्तन के निमित्त युवाओं द्वारा संकल्पित सकारात्मक चिंतन एवं योगदान ही बिहार के उज्ज्वलतम भविष्य की दिशा स्थापित करने का एकमात्र विकल्प है. इतिहास की प्रेरणा में ऐसी अद्भुत शक्ति समाहित है जो बिहार समेत संपूर्ण भारतवर्ष के भविष्य को परिवर्तित करने की क्षमता रखती है.

मेरा मन भविष्यात्मक दृष्टिकोण के निमित्त विशेषकर युवाओं से स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से आान करना चाहता है-

पूर्व प्रेरणा करे पुकार,आओ मिलकर गढ़ें नव बिहार
नव चिंतन नव हो व्यवहार, लघुवादों से मुक्त हो संसार
ज्ञान परंपरा का विस्तार, दीर्घ प्रभाव का सतत प्रसार
बृहतर चिंतन सह मूल्यों पर, आधारित युवा करें विचार

(आईपीएस विकास वैभव एक आईपीएस अधिकारी हैं और वर्तमान में बिहार में स्पेशल गृह सचिव के बतौर काम कर रहे हैं. व्यक्त विचार निजी हैं)

कांग्रेस, कन्हैया और बिहार

कभी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष और पिछले चार बरसों से देश के चर्चित युवा नेताओं में से एक कन्हैया कुमार के सीपीआई छोड़कर कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लेने से बिहार में राजनीतिक बदलाव के आसार बनने लगे हैं। कन्हैया के कांग्रेस ज्वाइन करने से बिहार की सबसे बड़ी और कांग्रेस की सहयोगी पार्टी आरजेडी खुश नहीं हैं। आरजेडी के नेताओं में इसे लेकर बौखलाहट देखी जा रही है।

आखिर कन्हैया के कांग्रेस ज्वाइन करने से आरजेडी में खुजलाहट क्यों है। बिहार की राजनीति के लिए ये बड़ी मार्के की बात है। बिहार में पिछले दो दशक से कांग्रेस और आरजेडी सहयोगी पार्टी रही है। कन्हैया के कांग्रेस में आने से सहयोगी दलों में बौखलाहट होना राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन के संकेत माने जा रहे हैं। कांग्रेस में शामिल होने के समय एआईसीसी दफ्तर में पत्रकारों से बात करते हुए कन्हैया ने इसका इशारा भी कर दिया।

उसने कांग्रेस को भाजपा के खिलाफ देश की सबसे बड़ी पार्टी बताते हुए कहा कि बिना कांग्रेस को मजबूत किए देश से भाजपा को नहीं हटाया जा सकता।

कन्हैया का यह वातार्लाप देश के भविष्य की राजनीति के लिए महत्वपूर्ण है। कांग्रेस को मजबूत करने के लिए दलित, मुस्लिम और सामान्य जातियों के समीकरण का पुराना फामुर्ला लागू करने का खामियाजा बिहार में आरजेडी और उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी जैसे दलों को भुगतना पड़ेगा। उसके मुस्लिम मतदाता सीधे केन्द्र की भाजपा सरकार के खिलाफ एकजुटता को लेकर कांग्रेस के पाले में जा सकता है।

मुस्लिम मानसिकता और मतदाताओं पर कन्हैया का प्रभाव देश स्तर पर रहा है। मुस्लिम युवा उसके भाषणों के फैन रहे हैं। वर्ष 2019 में बेगूसराय से सीपीआई प्रत्याशी रहते उसने आरजेडी के मुस्लिम कैंडिडेट से अधिक मत मुस्लिमों के लाकर इसका व्यवहारिक पक्ष भी दिखा चुका है। कांग्रेस में जाने के बाद उसका यह कहना कि भाजपा को घेरने के लिए वह बड़े जहाज की सवारी करने आया है। बिहार में इस समीकरण के घुमना कांग्रेस का कायाकल्प कर मजबूत बनाने में सहायक होगा। कन्हैया इसके लिए राहुल गांधी की टीम और कांग्रेस पार्टी के कथित बड़े जहाज का खेवनहार बन जा सकता है। भाजपा को केन्द्र से हटाने के खेल में बिहार का बदलाव कारगर होगा। राजद नेताओं की कन्हैया के कांग्रेस में जाने पर खीज इसी कारण है।

कांग्रेस के नेता अभय कुमार सारजन कहते हैं कि बिहार में कन्हैया पार्टी के बदलाव का ध्वजवाहक बन सकते हैं।यदि पार्टी स्वतंत्र निर्णय लेकर नए समीकरण के आधार वोट को संगठित करने में सफल होती है तो भाजपा को राज्य से केन्द्र तक हराया जा सकता है। कन्हैया के आने से बिहार में कांगसियो की आशा जगी है। बिहार एक नए परिवर्तन और रणनीति का गवाह बनेगा। बिहार में कांग्रेस का नेतृत्व उभरता है तो जाति और धर्म की राजनीति करनेवाली पार्टियां स्वंयमेव ही सिमट जाएगी।

कांग्रेस के बेगूसराय जिला उपाध्यक्ष अधिवक्ता रजनीश कुमार कहते हैं कि बिहार में कन्हैया का समीकरण सफल रहेगा। यहां के मुस्लिम और दलित मतदाता उसे जाति और धर्म से ऊपर का नैता मान चुके हैं। भाजपा को हराने के लिए सबसे बड़े विपक्षी दल कांग्रेस को मजबूत बनाना आज के वक्त और देश के हालात के लिए जरूरी है।

बिहार में कांग्रेस को कन्हैया जैसे सर्वमान्य नेता से उम्मीद जगी है । राजद और अन्य दल यदि भाजपा को हटाना चाहते हैं तो उसे सबसे बड़े विपक्षी दल कांग्रेस को बढ़ाना होगा।

बिहार में कांग्रसियों को कन्हैया को लेकर आशा जगी है। राज्य के राजद नेताओं के बोल भी बदलने लगे हैं। कांग्रेस बिहार की धरातलीय राजनीति में यदि कन्हैया की इंटरी कराती है तो पार्टी कार्यकताओं के लिए यह उत्साहजनक होगा।

कन्हैया ने एआईसीसी आफिस के प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसका इशारा भी कर दिया है।

सीपीआई कांग्रेस और कन्हैया

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष रहे और वर्ष 2019 में बेगूसराय संसदीय सीट से सीपीआई के उम्मीदवार रहे कन्हैया कुमार ने दिल्ली में सीपीआई छोड़कर कांग्रेस का दामन थाम लिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ही देश बचा सकती है। देश की पुरानी पार्टी होने के नाते यह भगतसिंह और महात्मा गांधी के विचारों की पार्टी है और उनके सपने इसी से पूरे हो सकते हैं।

कन्हैया कुमार वर्ष 2016 में तब चर्चा में आए थे जब जेएनयू में छात्र आंदोलन के क्रम में उनपर कथित रूप से देशविरोधी नारे लगाने का आरोप लगा था । वे इस मामले में जेल भी गए थे। देश-भर के भाजपा विरोधी दलों के नेताओं, बुद्धजीवियों, पत्रकारों, रणनीतिकारों ने उनको भारी क्रांतिकारी बताते हुए उनका खूब प्रोजेक्शन किया था। वामपंथियों को तो मानो नया मार्क्स लेनिन मिल गया हो,इस तरह से पिछले पांच सालों से वे उनको प्रोजेक्ट करते रहे। सीपीआई नेता के रूप में उन्होंने काफी ख्याति अर्जित की। अमूमन शाखा सदस्य बनाने वाली पार्टी ने उन्हें एकाएक राष्ट्रीय परिषद और राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बना दिया। इतना ही नहीं अमूमन नए कार्यकताओं को चुनाव में टिकट नहीं देनेवाले इस दल ने उन्हें तरजीह देते हुए बेगूसराय संसदीय सीट से चुनाव मैदान में भी उतारा। जबकि, बेगूसराय में कई नेता चुनावी टिकट के रेस में थे।

उनके चुनाव प्रचार में देश की कई नामी-गिरामी हस्तियां, फिल्मी दुनिया के लोग, कलाकार, चोटी के पत्रकार, बुद्धि जीवी आए। सीपीआई के चुनाव में जितना धन उसके यहां के इतिहास के चुनाव में खर्च नहीं हुए थे , उतना खर्च किया।। चुनावी फंडिंग में उन्होंने दूसरे दलों को भी मात दे दिया। लेकिन, देशद्रोही का ठप्पा लगे और अनोखा चुनाव प्रचार के बावजूद वे चुनाव जीत नहीं सके। बेगूसराय में कम मतों के अंतर से संसदीय चुनाव हारनेवाली सीपीआई कन्हैया के तामझामी चुनाव प्रचार के बावजूद चार लाख से अधिक मतों के अंतर से भाजपा के फायरब्रांड नेता गिरिराज सिंह से चुनाव हार गयी। पार्टी के अंदरखाने गुटबंदी को भी हार का कारण बताया गया था।

चुनाव के बाद से ही वे राष्ट्रीय क्षितिज के नेता हो गए। बिहार विधानसभा चुनाव में उनके तेघड़ा विधानसभा सीट से बतौर सीपीआई उम्मीदवार लडने की जोरदार चर्चा रही। लेकिन, पार्टी ने उन्हें चुनाव मैदान में नहीं उतारा। पिछले वर्ष पटना पार्टी कार्यालय में उनके गुट के नेताओं द्वारा सीनियर नेताओं के साथ बदसलूकी की चर्चा भी रही। सीपीआई से उनका विलगाव तब से ही शुरू हो गया था। अब वे कांग्रेस में हैं। जेएनयू से सीपीआई के साथ डफली बजाने वाले कन्हैया अब कांग्रेस की डफली बजावेंगे। कांग्रेस में वे भगतसिंह, गांधी जी औरअम्बेडकर के चित्र के साथ राहुल गांधी के साथ खड़े हैं। गांधी और मार्क्स, गांधी और अम्बेडकर, भगतसिंह और गांधी के साथ कांग्रेस के आधुनिक गांधी सोनिया और राहुल के साथ कितना फलोरिश करते हैं यह आनेवाला वक्त ही बताएगा।

बदलने लगा है कैमूर पहाड़ी का पूरा माहौल

अखिलेश कुमार

कभी नक्सलियों के अभेद्य गढ़ रहे बिहार झारखंड तथा उत्तर प्रदेश के सीमा पर स्थित कैमूर पहाड़ी का माहौल पुरा बदलने लगा है। रेड कॉरिडोर के नाम से प्रसिद्ध इस इलाके में अब अमन चैन स्थापित हो गया है। इसीलिए तो करीब दो दशक के बाद कैमूर पहाड़ी पर स्थित गावों के मतदान के केंद्रों पर पहली बार पंचायत चुनाव के दूसरे चरण में मतदान कराने का निर्णय पुलिस प्रशासन ने लिया और रोहतास जिले के रोहतास एवं नौहट्टा प्रखंड में शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त मतदान सम्पन्न हो गया है। इस इलाके में न केवल शांति पूर्वक मतदान हुआ बल्कि वोटों की बारिश हो गयी। गांव की सरकार बनाने के लिए पहाड़ पर बसे वनवासियों में उत्साह ऐसा था कि एक दिन पूर्व ही रेहल मतदान केंद्र पर पहुंच गए थे। सुबह से ही सभी बूथों पर भारी भीड़ रही। यहां मतदान के लिए 4 बजे तक का ही समय निर्धारित था। लेकिन भीड़ के कतारबद्ध रहने के कारण यहां साढ़े छह बजे मतदान समाप्त हुआ। जो लोकतंत्र की जीत की तस्वीर है। मतदाताओं में उत्साह का नतीजा ही रहा कि पहाड़ी पर बनाए गए बूथों पर रिकार्डतोर मतदान हुआ। मतदान के दिन जिउतियो के वाबजूद भी महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत पुरुष वोटरों के मुकाबले अधिक रहा।।रोहतासगढ़ पंचायत के धनसा मध्य विद्यालय में बने आठ मतदान केंद्रों पर रिकॉर्ड 74.06 प्रतिशत वोटिंग हुई। जिसमें पुरुष मतदाता 75 प्रतिशत एवं महिला मतदाता 73.07 प्रतिशत मतदान किया। वहीं पीपरडीह पंचायत के रेहल पंचायत भवन एवं राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेहल में बने सभी 10 मतदान केंद्रों पर रिकॉर्ड 75.68 प्रतिशत वोटिंग हुई। जिसमें पुरुष मतदाता 75.24 प्रतिशत एवं महिला मतदाता 76.19 प्रतिशत मतदान किया। जबकि

पूरे रोहतास प्रखंड में 63 प्रतिशत मतदान हुआ। जिसमें 70 प्रतिशत महिलाएं और 56 प्रतिशत पुरुषों ने मतदान किया है। नौहट्टा प्रखंड में 66 प्रतिशत मतदान हुआ है। जिसमें 78 प्रतिशत महिलाएं और 54 प्रतिशत पुरुषों ने मतदान किया है। हालांकि पहले चरण में भी पुरूषों की तुलना में महिलाओं ने ज्यादा वोट किया था, लेकिन दूसरे चरण में जिउतिया उपवास के वाबजूद महिलाओं

का प्रतिशत ज्यादा होना अहम है। मतदान के दौराने रोहतास डीएम धर्मेंद्र कुमार, एसपी आशीष भारती, डेहरी एसडीओ समीर सौरभ, एएसपी नवजोत सिमी सुबह से ही दोनों प्रखंडों के पहाड़ी मतदान केंद्रों पर पहुंच कर निरीक्षण किया।

विदित हो कि नक्सल प्रभावित होने के चलते पूर्व में रोहतास प्रखंड के रोहतासगढ़ पंचायत के पहाड़ी पर बसे गांव एवं नौहट्टा प्रखंड के पहाड़ी पर बसे पीपरडीह पंचायत के मतदान केंद्रों को मैदानी इलाके में स्थानांरित कर दिया जाता था। जहाँ 30 से 40 किलोमीटर दूर दुर्गम पहाड़ी से उत्तर कर पैदल ही मतदाताओं को मतदान करने के लिए जाना पड़ता था। लेकिन इस बार वनवासियों के जीद के बाद प्रशासन झुक गयी। दरअसल प्रशासन की मंशा इस बार भी नीच हीं मतदान कराने की थी। इसकी भनक मतदाताओं और उम्मीदवारों को लग गई।नाराज लोगों ने न केवल मतदान का वहिष्कार करने का निर्णय लिया, बल्कि सभी उम्मीदवार सामूहिक रूप से नामजदगी का पर्चा वापस लेने का निर्णय लिया। और इसकी लिखित शिकायत वरीय अधिकारी से लेकर चुनाव प्राधिकार तक किया। उनका कहना था कि माहौल पुरी तरह समान्य हो गया है और यहां के ग्रामीण अमन चैन स्थापित करने के लिये कटिबद्ध हैं। ऐसे में मतदान केंद्र स्थानान्तरित नहीं किया जाए। और बूथ को पहाड़ पर ही रखा जाए। उनका दबाव काम आया, जिला प्रशासन को भी यह स्वीकार करना पड़ा और फिर 2001 के बाद 2021 में पहाड़ी पर मतदान हुआ और यह पूर्णतः शान्तिपूर्वक मतदान सम्पन्न हुआ। पहाड़ी पर ही मतदात केंद्र होने से मतदाताओं में काफी खुशी का माहौल दिखा। ग्रामीणों ने बताया कि मैदानी इलाके में चुनाव कराए जाने पर 30 से 35 फीसद ही मतदान हो पता था। इस बार 75 फीसद से भी अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

बता दें कि पहाड़ी क्षेत्र में मतदान के दौरान पूर्व में पुलिस-प्रशासन को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। कैमूर पहाड़ी पर 2001 में नक्सलियों के आतंक के बाद भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच वास्तविक मतदान केंद्र रेहल, सोली, पीपरडीह, चुनहट्टा में मतदान कराए गए थे। 15 फरवरी 2002 को रेहल में नक्सलियों ने डीएफओ संजय सिंह की हत्या कर दी थी। इसके सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन ने पहाड़ी गांव के सभी मतदान केंद्रों को मैदानी इलाकों में स्थानांरित कर दिया था। वर्ष 2005 में विधानसभा चुनाव के दौरान नौहट्टा थाना क्षेत्र के चुनहट्टा गांव के पास रोहतास-चुटिया मार्ग पर बारूदी सुरंग विस्फोट कर पुलिस इंस्पेक्टर काशीनाथ शर्मा को नक्सलियों ने उड़ा दिया था। वे शहीद हो गए थे। अंचलाधिकारी किशोर कुमार की जीप व राकांपा प्रत्याशी विनायक पांडेय के प्रचार वाहन को जला दिया गया था। वहीं, 2006 के लोकसभा चुनाव के दौरान घटी थी बड़ी घटनो वर्ष 2006 में लोकसभा चुनाव के दौरान चुटिया और डबुआ मोड़ के बीच पोलिग पार्टी पर हमला कर आरक्षी अनिल कुमार सिंह की बारूदी सुरंग से हत्या कर दी थी। वर्ष 2005 में ही रोहतास थाना क्षेत्र के कैमूर पहाड़ी पर पोलिग पार्टी को ले जाने के क्रम में सीआरपीएफ 139 बटालियन के सहायक समादेष्टा एसके यादव पर रोहतास से तारडीह के बीच नक्सलियों ने तीन जगहों पर बारूदी सुरंग विस्फोट कर हमला करने का प्रयास किया था। इसे सीआरपीएफ द्वारा विफल कर दिया गया था। लोकसभा चुनाव के दौरान नक्सलियों ने मध्य विद्यालय धनसा में कैंप कर ठहरे बीएसएफ जवानों पर राकेट लांचर का प्रयोग किया था। पूर्व में चुनाव के दौरान कमोवेश हर समय पुलिस और पोलिग पार्टी पर हमला कर नक्सली अपने वजूद का एहसास कराते रहते थे। इसके चलते कैमूर पहाड़ी पर बसे गांव से 19 मतदान केंद्रों को मैदानी इलाकों में स्थानांतरित कर दिया जाता था।

शान्तिपूर्ण मतदान के लिए रोहतास के जिलाधिकारी धर्मेन्द्र कुमार और आरक्षी अधीक्षक आशीष भारती मतदान के दिन खुद पहाडी गांव और झारखंड उत्तर प्रदेश के सीमा तक मुस्तैद नजर आए।

भागलपुर में बिहार सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री विजय चौधरी जी को पौधा दे कर अंग की धरती सर्किट हाउस में स्वागत करते हुई. प्रारंभिक माध्यमिक शिक्षक संघ भागलपुर की वरीय शिक्षिका डॉ सुमन कुमारी सोनी सह प्रांत शिक्षिका प्रमुख। साथ मे श्री संजीव कुमार यादव जी, राजेश जी, मुकेश जी एवम अन्य शिक्षकगण उपस्थित थे। इन सबो ने शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को लेकर शिक्षा मंत्री से मिल अपनी अपनी बातें रखी। डॉ सुमन कुमार वरोय शिक्षिका सह,प्रान्त उपाध्यक्षका प्रारंभिक माध्यमिक शिक्षक संघ,भागलपुर की ने दी।

उड़ता सीमांचल बनने से रोकने की जद्दोजहद किशनगंज पुलिस की मुहिम अब रंग लाने लगी है

देश का युवा जहां एक तरफ नशे का शिकार हो रहा है, वहीं दूसरी ओर लोगों को नशे से सावधान रहने की प्रेरणा देने वाले भी कम नहीं हैं. ऐसी ही एक मुहिम बिहार के किशनगंज के युवा एसपी कद्धर एसपी कुमार आशीष चला रहे है. अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकाल कर लोगों को नशे से दूर रहने के लिए युवा पीढ़ी को एसपी मुहिम चलाकर जागरूक कर रहे हैं. एसपी कुमार आशीष अपनी व्यस्त दिनचर्या एवं ऑफिस के कामो से समय निकालकर खाली वक्त में किशनगंज जिला के सुदूरवर्ती इलाको के गांवों एवं स्कूलों में माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना पूर्ण शराबबंदी तथा पूर्ण नशाबंदी के लिए अलख जगाने के लिए प्रयासरत है. नशे जैसी आदत से लोगों को बचाने की एसपी कुमार आशीष की ये मुहिम अब रंग लाने लगी है. अब युवा, स्कूली छात्र-छात्राएं, अभिभावक एवं समाज के प्रबुद्ध नागरिक भी इनके साथ आने लगे हैं. और ये उपलब्धियाँ आंकड़ों में भी दिखाई दे रही हैः

आंकड़ों पर गौर करें तो हम पाते हैं की किशनगंज जिलान्तर्गत मादक पदार्थों का सेवन, भंडारण एवं वितरण करने वालों के विरूद्ध विगत पांच वर्षो (2016 से 2021 तक) में लगातार कार्रवाई करते हुए 1415 किग्रा गांजा, 138 किग्रा अफीम का पौधा, 52 किग्रा अफीम, 05 किग्रा अफीम का फल, 2.267 किग्रा स्मैक, 1.085 किग्रा हीरोईन, 5.690 किग्रा चरस, 859.850 ग्राम ब्राउन सुगर, 02 कार्टून सिरप, कोडिंग सिरप 46 लीटर, 650 ग्राम आईस ड्रग्स एवं 498.3 मिग्रा मेस्कॉलीन नशीली दवाएँ जप्त, संलिप्त 215 अभियुक्त गिरफ्तार तथा बिहार राज्य पूर्ण शराबबंदी के तहत वर्ष-2016 से 31 अगस्त, 2021 तक अवैध विदेशी शराब-1,02,968 लीटर, देशी शराब-36,959.550 लीटर,कुल- 1,39,927 ली० शराब जब्त, दो पहिया वाहन-162, चार पहिया वाहन-174 जप्त, संलिप्त 1875 अभियुक्त गिरफ्तार एवं शराबबंदी का उल्लघंन करने वाले 04 पुलिसकर्मी को सेवा से बर्खास्त किया जा चुका है, और 10 तस्करों को माननीय न्यायालय द्वारा विधिसम्मत सजा दिलाई जा चुकी है.

सूखे नशे के प्रकोप से जिले को बचाने के लिए किशनगंज पुलिस द्वारा विगत वर्षो (2016 से 2021 अब तक) में मादक पदार्थों का सेवन, भंडारण एवं वितरण करने वालों के विरूद्ध लगातार कार्रवाई करते हुए इन कांडों में संलिप्त अभियुक्तों को छापामारी/कार्रवाई करते हुए एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत मादक पदार्थों की बरामदगी करते हुए कांड में संलिप्त अभियुक्तों की गिरफ्तारी की गयी है, जिसकी वर्षवार विवरणी निम्न प्रकार हैः-

1. वर्ष-2016 में एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-20 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 19 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 136.668 किग्रा गांजा, 19.524 किग्रा अफीम, 3.34 ग्राम हेरोईन एवं 5.690 किग्रा0 चरस बरामद किया गया।

2. वर्ष-2017 में एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-07 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 09 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 190.070 किग्रा गांजा, 4.020 किग्रा अफीम एवं 222 ग्राम हेरोईन बरामद किया गया।

3. वर्ष-2018 में एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-14 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 32 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 384.010 किग्रा गांजा, 5.870 ग्राम स्मैक एवं 650 ग्राम आईस ड्रग्स बरामद किया गया।

4. वर्ष-2019 में एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-20 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 32 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 21.827 किग्रा गांजा, 750 ग्राम अफीम, 260 ग्राम हेरोईन, 1.010 किग्रा 474 मिग्रा0 स्मैक, 8 ग्राम ब्राउन एवं 498.3 मिग्रा मेस्कॉलीन नशीली दवा बरामद किया गया।

5. वर्ष-2020 में एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-15 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 23 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 344.193 किग्रा गांजा, 1.241 किग्रा अफीम, 30.490 ग्राम स्मैक एवं 150 ग्राम ब्राउन सुगर बरामद किया गया।

6. वर्ष-2021 के माह जुलाई तक एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत कुल-24 कांड दर्ज किये गये। कांड में संलिप्त 71 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया एवं उनसे 153.332 किग्रा गांजा, 138.440 किग्रा अफीम का पौधा, 1.220 किग्रा

553 मिग्रा स्मैक, 60 ग्राम ब्राउन सुगर एवं 46 लीटर कोडिंग सिरप बरामद किया गया।

बिहार राज्य के पूर्ण शराबबंदी अभियान में किशनगंज पुलिस द्वारा अबतक की गयी कार्रवाईः कुल गिरफ्तारी 2093, कुल दर्ज कांड 1741

1. वर्ष-2016 में शराब से सम्बंधित कुल 214 कांड दर्ज किये, जिसमें 1318.720 लीटर देशी शराब, 422.935 लीटर विदेशी शराब, 13 दो पहिया वाहन एवं 09 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 275 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

2. वर्ष-2017 में शराब से सम्बंधित कुल 276 कांड दर्ज किये, जिसमें 1028.085 लीटर देशी शराब, 5791.505 लीटर विदेशी शराब, 18 दो पहिया वाहन एवं 16 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 356 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

3. वर्ष-2018 में शराब से सम्बंधित कुल 218 कांड दर्ज किये, जिसमें 868.225 लीटर देशी शराब, 1826.440 लीटर विदेशी शराब, 21 दो पहिया वाहन एवं 08 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 233 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

4. वर्ष-2019 में शराब से सम्बंधित कुल 301 कांड दर्ज किये, जिसमें 2091.890 लीटर देशी शराब, 19414.685 लीटर विदेशी शराब, 50 दो पहिया वाहन एवं 30 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 384 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

5. वर्ष-2020 में शराब से सम्बंधित कुल 318 कांड दर्ज किये, जिसमें 2199.930 लीटर देशी शराब, 37.946.064 लीटर विदेशी शराब, 24 दो पहिया वाहन एवं 44 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 317 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

6. वर्ष-2021 से 31-08-2021 में शराब से सम्बंधित कुल 289 कांड दर्ज किये, जिसमें 29452.700 लीटर देशी शराब, 37567.275 लीटर विदेशी शराब, 36 दो पहिया वाहन एवं 67 चारपहिया वाहन के साथ अपराध में संलिप्त 310 व्यक्तियों की गिरफ़्तारी की गयी।

साथ ही बिहार में पूर्णतः शराब बंदी के तहत वर्ष-2016 से अबतक पुलिस विभाग में शराब का सेवन, भंडारण एवं वितरण करने वाले पुलिस पदाधिकारी/कर्मियों पर भी कार्रवाई की गयी हैः- वर्ष-2016 में सिपाही रंजीत ठाकुर को शराब का सेवन करने के आरोप में जेल भेजा गया एवं उनपर विभागीय कार्यवाही प्रारंभ कर अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी गयी। वर्ष-2018 में हव0 सुबेदार सिंह यादव पर शराब के आरोप में विभागीय कार्यवाही प्रारंभ कर अनिवार्य सेवानिवृति दी गयी। वर्ष-2019 में सिपाही जियाउल हक को शराब का सेवन करने के आरोप में जेल भेजा गया एवं विभागीय कार्यवाही प्रारंभ कर सेवा से बर्खास्त किया गया। वर्ष-2021 में सिपाही धीरज कुमार को शराब का सेवन करने तथा शराब के साथ पकड़े जाने पर गिरफ्तार कर जेल भेजा गया एवं विभागीय कार्यवाही प्रारंभ कर सेवा से बर्खास्त किया गया। ये आंकड़े इंगित करने के लिए काफी है की शराबबंदी के विषय पर कोई ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जा रही है. जो भी इस अवैध धंधे में लिप्त पाए जायेंगे, बख्शें नहीं जायेंगे.

किशनगंज पुलिस की अपील

जिस तरह हमारे देश मे युवाओं का नशे की तरफ रुझान बढ़ रहा है, वह वाकई गंभीर चिंता का विषय है.वह युवा जिसे हम अपने देश की शक्ति मानते है जिसे हम भारत देश का भविष्य मानते है,उसे नशे की कीड़े ने ऐसा जकड़ लिया है की जैसे शिकारी अपने शिकार को जकडता है,ओर नशा का कीड़ा ऐसा होता है की जो व्यक्ति की मौत के बाद ही उसे छोड़ता है.वही किशनगंज पुलिस का कहना है की अगर कोई भी व्यक्ति "पूर्ण नशा बंदी" में पुलिस का सहयोग करता है तो उन्हें समुचित रूप से एसपी किशनगंज द्वारा पुरस्कृत भी किया जाएगा. वहीं एसपी कुमार आशीष का कहना है आज युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में हैं. हमारा प्रयास समाज मे नशे की लत में घिर चुके युवा पीढ़ी को नशा त्यागने की प्रेरणा देने के लिए किया जा रहा हैं. प्रतिक्रिया सकारात्मक है इसलिए कि उम्मीद पर दुनिया कायम है. और हम लोगों को ही सही समय पर नशे की गिरफ्त में आने से पहले अगर बचा ले तो ये हमारे लिए देश सेवा से कम नही होगा. हर प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन आपके जीवन में तबाही लेकर आता है. नशा एक अभिशाप है. यह एक ऐसी बुराई है, जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है. नशे के लिए समाज में शराब, गांजा, भांग, अफीम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकु और धूम्रपान (बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, चिलम) सहित चरस, स्मैक, कोकिन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है इन जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचने के साथ ही इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता ही है साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी भारी नुकसान पहुंचाता है. नशे के आदी व्यक्ति को समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता है. नशे करने वाला व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरुप हो जाता है, उसकी समाज एवं राष्ट्र के लिया उपादेयता शून्य हो जाती है. वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है. इसे पूर्ण रूपेण त्यागने की जरुरत है. पुलिस-प्रशासन लगातार इसपर कठोर कार्रवाई कर रहा है. आमजनों से भी सूचना और सहयोग की अपील है.

उनके जुझारू नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में किशनगंज पुलिस आम नागरिकों के सहयोग से लगातार सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करने में लगी हुई है. पर्याप्त संसाधनों की कमी के बावजूद किशनगंज पुलिस ने पिछले साढ़े तीन सालों के उनके अब तक के कार्यकाल में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं. आइये, हम सब बिहार सरकार के इस महाभियान जो समाज की दिशा और दशा दोनों बदल सकता है, इसके अक्षरशः अनुपालन अपना अपना महती सहयोग करें, अपने बच्चों, देश-राज्य के भविष्य को नशे के चंगुल से बचाएं, एक सुदृढ़ और सरंक्षित भारतराष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान करें.

रोहतासगढ़ किला से होगा शाहाबाद महोत्सव का आगाज

तीन महोत्सव में जुटेंगे बिहार के अलावे झारखंड तथा उत्तर प्रदेश के लोग

सोन तटीय इतिहास और सांस्कृतिक पर सेमिनार के मुख्य वक्ता होंगे विकास वैभव

सोन आरती भी करेंगे गृह विभाग के विशेष सचिव

अखिलेश कुमार

कभी करूष प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध रहा शाहाबाद के ऐतिहासिक धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को बढावा देने तथा यहाँ पर्यटन के विकास हेतु पिछले तीन वर्षों से अभियान चला रहे शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति ने इस बार रोहतासगढ़ किला परिसर में महोत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में आयोजन समिति के संयोजक अखिलेश कुमार ने बताया कि आगामी 2-4-5 दिसम्बर को महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज से 13 वर्ष पूर्व रोहतास जिले के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक व वर्तमान में बिहार सरकार गृह विभाग के विशेष विकास वैभव ने उग्रवाद पर नियंत्रण करने व स्थानीय लोगों को विश्वास में लेने के उद्देश्य से 3 दिसम्बर 2008 को पहली बार सोन महोत्सव रोहतास बाजार पर कराया था, और उनका वह प्रयास काफी सफल रहा। चुकि अब इस इलाके में बहुत हद तक शान्ति स्थापित हो गया है। ऐसे में उस तिथि को केंद्र में रखकर तीन दिसम्बर से महोत्सव का आगाज सोन नद में स्थित दशाशिश महादेव मंदिर बांदू में सोन आरती से होगा। जिसके मुख्य अतिथि बिहार गृह

विभाग के विशेष सचिव विकास वैभव होंगे। वहीं 4 दिसम्बर को रोहतासगढ़ किला परिसर 'सोन तटीय इतिहास और सांस्कृतिक' विषय पर सेमिनार होगा। उस सेमिनार में बिहार के पटना, रोहतास, भोजपुर, अरवल तथा औरंगाबाद के अलावा झारखंड के पलामू, गढ़वा एंव उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता विकास वैभव होंगे। जबकि 5 दिसम्बर को शाहाबाद के इतिहास, कला, संस्कृति पर चर्चा होगी और यहां के महापुरुषों चित्र प्रदर्शनी तथा प्रमुख खाद्य सामग्री का भी प्रदर्शनी लगाया जाएगा। इसमें राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, नृत्य संगीत आदि क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले प्रमुख लोग शामिल होंगे। साथ हीं उरावं समुदाय के लोग को भी इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है जो रोहतासगढ़ से हीं देश दुनिया के विभिन्न भागों में आज फैले हैं।

अंधकार से पुनः प्रकाश की राह पर कैमूर की वादियां

लाखों वर्षों से धरोहरों को सहेजे इलाके में पर्यटकों की बढ़ी रुचि

यूजीसी ने किया सूची में शामिल

अखिलेश कुमार

विन्ध्यगिरी पर्वत श्रृंखला के कैमूर पहाड़ी लाखों वर्षों से मानव जीवन के विकास का गाथा अभी तक सहेज कर रखे हुए है, जो मानव सभ्यता के विकास और आदिम युग से आधुनिक काल तक के बदलते स्वरूप के अध्ययन का प्रमुख केंद्र बन सकता है। झारखंड तथा उत्तर प्रदेश के सीमा पर स्थित बिहार के रोहतास एंव कैमूर जिला अन्तर्गत समुद्रतल से करीब 2000 फीट की ऊंचाई पर स्थित इन वादियों में अनेक रहस्यमय किला, गुफा, मंदिर एंव शिलालेख हैं जिनके अध्ययन से चौंकाने वाले तथ्य उजागर हो सकता है। और शायद इसी को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानि यूजीसी ने पिछले 22 सितम्बर को छात्र छात्राओं के परिभ्रमण हेतु देश के 100 स्थानों का जो सूची जारी किया है उसमें इस भाग को भी शामिल किया गया है। यूजीसी द्वारा देश के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को जारी दिशानिर्देश में यहाँ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक योगदान आदि से छात्र छात्राओं को रूबरू कराने को कहा गया है।

दरअसल सोन नद से दो तरफ से घीरा हुआ कैमूर पहाड़ी काफी दुर्गम एवं प्रचुर प्रकृति संपदा और मोहक तथा मनोरम दृश्यों से परिपूर्ण है। यही कारण है कि आदिमानव से लेकर वर्तमान आधुनिक काल तक के लोगों का आकर्षण का केंद्र बना रहा। इसी पहाड़ी पर विश्व का सबसे प्राचीनतम किला रोहतासगढ़ आज भी हजारों साल के ऐतिहासिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत को सहेजे हुए विद्यमान है। किंवदंती के अनुसार सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र के बेटे रोहिताश्व द्वारा इसका निर्माण कराया गया था। करीब 45 किलोमीटर की परिधि में अति सुरक्षित यह किला उरावं, खरवार, मुगल आदि शासकों का भी केंद्र रहा है। इसी के साथ शेरगढ़ किला, माँ मुंडेश्वरी मंदिर, तुतला जल प्रपात, गुप्ताधाम, जैसे ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्व के स्थलों के साथ अनेकों जलप्रपात, गुफाएं, घने जंगल बौद्ध तथा अन्य शिलालेख, शैल आश्रम, रॉक पेंटिंग शोध के विषय हैं। इस पहाड़ी में अनेक खनिज सम्पदा के भंडार भी है।

इतनी सारी खूबियों को अपने आगोश में लाखो वर्षों से सहेजे हुए इस इलाके का दुर्भाग्य पहलू यह है कि आजतक यह राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय मानचित्र पर अपनी पहचान नहीं बना सका है। आजादी के 75 वर्षों बाद भी यहाँ के जनप्रतिनिधि इन महत्वपूर्ण स्थलों को लेकर कभी भी गंभीर प्रयास नहीं किये। हालांकि पिछले तीन वर्षों से इस इलाके के उत्साही टीम ने 'शाहाबाद महोत्सव' के माध्यम से यहाँ के ऐतिहासिक धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विरासत को बढावा देने के लिए प्रयासरत है साथ हीं पर्यटन के टुरिज्म सर्किट बनाने का अभियान छेड़ रखा है। इसको लेकर पिछले जुलाई के अन्तिम सप्ताह में बिहार विधानसभा चलने के दौरान ही विधान परिषद् के सभागार में एक बैठक भी हुई, शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के संयोजक अखिलेश कुमार के पहल पर आयोजित बैठक में पहली बार पक्ष विपक्ष यानि भाजपा, राजद, कॉग्रेस, जदयू के मंत्री विधायक सभी बिहार विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह के अध्यक्षता में बैठक कर सभी राजनीतिक मतभेदों को भूलकर विकास की गति तेज करने का संकल्प लिया। सभापति अवधेश नारायण सिंह ने शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति द्वारा रखे प्रस्ताव का समर्थन करते हुए जदयू कोटे से मंत्री जमा खान व सभी उपस्थित विधायक, विधान परिषद् सदस्य से कहा कि 'चुनाव में पार्टी, चुनाव बाद आपन माटी।' यानि चुनाव के वक्त सभी अपने अपने दल के लिए काम करें, लेकिन चुनाव सम्पन्न होते हीं अपने माटी या क्षेत्र के विकास हेतु मिलजुल कर कार्य करना चाहिए।

शाहाबाद में पर्यटन को विकसित करने के लिए अभी तक सरकारी स्तर पर उपेक्षा का हीं दंश झेलना पड़ रहा है, लेकिन यहाँ के युवा, उत्साही और ऊजार्वान युवाओं की टीम ने अपने स्तर से कैमूर पहाड़ी पर पर्यटकोंको आकर्षित करने के लिए काफी प्रयासरत हैं। इस कार्य में गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय भी काफी सहायक सिद्ध हो रहा है।

डेढ़ दशक से अधिक समय तक उग्रवादियों का अभेद्य गढ़ रहा यह पहाड़ी क्षेत्र अब समान्य हो गया है और यहां के निवासी भी मुख्य धारा से जुड़ने को आतुर हैं। यही कारण है कि दिन तो दिन, अब रात में भी युवक युवतियां रेंज ट्रैकिंग कर रहे हैं और लोग कैमूर पहाड़ी तथा तराई इलाके में सपरिवार रात्रि विश्राम कर प्रकृति-प्रेम का आनंद ले रहे हैं। सितम्बर के प्रथम सप्ताह में रोहतास और कैमूर जिले के पांच दिवसीय दौरे पर आए बिहार के वन एंव पर्यावरण मंत्री नीरज कुमार बबलू ने यहाँ के प्रकृति सौन्दर्य को देखकर कहा कि 'यह तो दुसरा मंसुरी है।' उन्होंने कहा कि वन एवं पर्यावरण मंत्रालय कैमूर पहाड़ी पर इको टुरिज्म विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी, क्योंकि यहाँ पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

अज्ञानता के अंधकार दूर करते अमरदीप झा गौतम...

अपनी अलग-सोच व अलग-अंदाज की वजह से अमरदीप झा गौतम ने एलिट इंस्टीच्यूट को शिखर तक पहुंचा दिया है।

बच्चों के साथ सपने देखना, उसके सपने बुनना और फिर उन सपनों को अंजाम तक पहुंचाने के लिए दिन-रात की मेहनत का ही नतीजा है कि हर साल एलिट इंस्टीच्यूट देश को बेहतर इंजीनियर और डॉक्टर देता रहा है।

पटना स्थित एलिट इंस्टिच्युट ((Elite Institute) इंजीनियरिंग व मेडिकल प्रतियोगी-परीक्षाओं की तैयारी के अलावा प्लस-टू (ग्यारहवीं और बारहवीं) के छात्रों का मार्गदर्शन करने वाला अपनी तरह का अनूठा-संस्थान है ।

बाजारवाद की चकाचौंध से अलग छात्रों के साथ गुरु-शिष्य की परम्परा का निर्वाह करने वाला यह संस्थान न सिर्फ छात्रों को निखार कर उनके करियर की मंजिल तक पहुंचाता है ब्लकि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के सांचे में ढालता भी है।

संस्थान के निदेशक व फिजिक्स के विख्यात शिक्षक अमरदीप झा गौतम का गुरुमंत्र ही कुछ ऐसा है कि कोई भी उनके सानिध्य में आकर अपने जीवन को संवार सकता है।

वह कहते हैं;
सारा जीवन कालचक्र है,
आना-जाना यहां खेल है।
अपने उज्ज्वल लक्ष्य को देख,
रहा पुकार न कर अनदेख।
आशाओं के दीप जलाकर कर्म करो,
बस यही धर्म है !

तनाव में भी हंसना-हंसाना...

20 वर्ष पूर्व चार छात्रों के साथ शुरू हुआ यह संस्थान आज वट-वृक्ष का रूप ले चुका है और आज यह संस्थान बिहार ही नहीं बल्कि समूचे हिंदी-पट्टी में सम्मान की नजरों से देखा जाता है। अगर 2020 के रिजल्ट पर नजर डालें, तो 182 जेईई मेन, 33 जेईई एडवांस्ड, 74 नीट-मेडिकल में बच्चों को क्वालिफाइड करवा चुके अमरदीप झा गौतम का सफर काफी लंबा है।

20 सालों से हर दिन बच्चों के बीच रहते, उनसे फ्रेंडली बातें करते, उनकी प्रॉब्लम को सुनते और फिर उस प्रॉब्लम को दूर करने में लग जाते।

इस दौरान एक बार भी उनके चेहरे पर थकान का भाव नहीं आता। एलिट इंस्टीच्यूट की सफलता के पीछे उनकी बेहतर सोच और बेहतर कर्म ही है कि वो आज बच्चों को बेहतर सुविधा के साथ-साथ बेहतर फ्यूचर प्रोवाइड करवा रहे हैं।

16 टीचर और 10 नन-टीचिंग स्टॉफ के साथ मॉडर्न टीचिंग-हब के रुप में विकसित हो चुका एलिट इंस्टीच्यूट बच्चों के सवालों के जवाब पर खरा उतर रहा है। यहाँ इंजीनियरिंग और मेडिकल दोनों के ही एक्सपर्ट द्वारा इसकी पढ़ाई करवायी जाती है।

स्मार्ट स्टडी और प्रैक्टिकल-एप्रोच

पटना में एलिट इंस्टीच्यूट ((Elite Institute) ऐसा पहला संस्थान के रूप में सामने आया, जो अपने बच्चों की सुविधा और उसके ज्ञान को उन्हीं की लैंग्वेज में समझाने का ट्रेंड शुरू कर पाने में सफल हो पाया। एलिट अपने स्टूडेंट्स के लिए स्मार्ट-स्टडी के साथ-साथ मॉडर्न स्टडी-पैकेज भी मुहैया करवा रहा है।

बच्चों में स्पेसिफिक-पोटेंशियल विकसित करने के लिए एलिट ने अब दसवीं पास स्टूडेंट्स को मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए थ्री-ईयर कोर्स शुरू करवा रहा है। इस कोर्स का उद्देश्य छात्रों में बेसिक-स्ट्रेंथ विकसित करना है ताकि प्रतियोगी परीक्षा में सफलता को सुनिश्चित करना और आसान हो सके।

सम्मान और पुरस्कार

2012 में स्थानीय न्यूज चैनल की ओर से बेस्ट-मोटिवेटर अवार्ड।

2013 में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के समूह द्वारा

युवा शिक्षा सम्मान।

2014 में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए शिक्षा-रत्न पुरस्कार।

2015 में आईनेक्स्ट-अखबार के द्वारा एजुकेशनल-एचिवर्स अवार्ड।

2015 में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री से सरस्वती-सम्मान।

2016 में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा लालबहादुर शास्त्री सम्मान।

2016 में युवा विज्ञान-विश्लेषक सम्मान।

2017 में जागरण-समूह द्वारा गुरु-सम्मान।

2018 में गैर-सामाजिक संगठन द्वारा युवा-दार्शनिक सम्मान।

2018 में चंपारण में युवा-कविरत्न सम्मान।

2019 में भौतिकी के क्षेत्र में विलक्षण-प्रयोगों के लिये भारत-विभूति सम्मान।

2019 में "रिदमिक-एक्शन" के प्रयोगों के लिये युवा-दार्शनिक सम्मान।

2020 में ज्ञानोदय-योजना के लिये सरस्वती-सम्मान।

इस संस्थान के छात्रों में चहुमुखी विकास के लिए हर प्रयास किये जाते हैं और कोर्स को कुछ इस तरह से डिजाइन किया जाता है कि छात्रों में सृजनशीलता विकसित की जा सके।

एलिट इंस्टीच्यूट के संस्थापक-निदेशक अमरदीप झा गौतम ने बताया कि बच्चों के स्किल को अपडेट करने के लिए हर 45 दिनों पर बच्चों की काउंसिलिंग करायी जाती है।इसमें स्टूडेंट्स की इनर्जी, उसका लेवल, उसकी समझदारी का आंकलन करने के बाद उसकी कमियों को दूर करने की दिशा में भी काम किया जाता है।

मेधावी बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं

ज्ञानोदय योजना के अंतर्गत एलिट-21 प्रोग्राम चलाया जाता है।

इसमें वैसे 21 बच्चों का सेलेक्शन किया जाता है जो गरीब होते हैं।

उनके अंदर जबरदस्त-मेधा रहती है, साथ ही उसके घर की वार्षिक आय एक लाख या उससे कम हो।

गरीब बच्चों के लिए 25 परसेंट की स्कॉलरशिप दी जाती है।

भारतीय-सेना के परिवारों को 25 परसेंट की अतिरिक्त स्कॉलरशिप दी जाती है।

लड़कियों को पूरे साल बीस परसेंट की छूट उपलब्ध करवायी जाती है।

- 2021 से एन.डी.ए. (National Defence Academy) की पढाई शुरू हो गई है।

- 2022 से ग्रामीण-परिवेश के स्टूडेंट्स को कंप्यूटर की पढ़ाई और ऑनलाइन-टेस्ट के प्रैक्टिस के लिये कंप्यूटर-लैब की व्यवस्था की जायेगी।

- प्रैक्टिकल-एप्रोच से फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ और बायोलॉजी पढ़ाया जाता है।

इतना ही नहीं यह प्रयास किया जाता है कि सिर्फ कोचिंग हीं नहीं बल्कि सेल्फ स्टडी के लिए छात्र खुद को तैयार कर सकें. इसके लिए लाइब्रेरी, डिस्कशन हॉल, ऑन-लाइन और ऑफ-लाइन सिस्टम के साथ-साथ इंग्लिश की पढ़ाई भी मुहैया करवायी जा रही है।

योग-विज्ञान और कल्पना-शक्ति के सदुपयोग के प्रयोग...

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के क्रम में छात्रों को रोबोट या मशीनी-मानव बनाने के बजाये उनमें मौलिक-संवेदना विकसित करना और उनके शारीरिक व मानसिक-विकास का प्रत्येक-स्तर पर ध्यान रखना एलिट की परम्परा का हिस्सा है। इसलिए एलिट एक ऐसा संस्थान हो पाया, जहाँ छात्र-छात्राओं को नियमित-अंतराल पर योगासन, प्राणायाम और ध्यान के प्रयोगों से उनको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संवर्धन का लाभ मिलता है। वहीं संस्थान के निदेशक अमरदीप झा गौतम का शोध रिदमिक-एक्शन के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के साथ अपनी कल्पना-शक्ति को जोड़ना सिखाया जाता है।

जनरल लाइफ के एग्जांपल से प्रॉब्लम दूर

कुछ स्टूडेंट्स की शिकायत रहती है कि वे सवाल करने से डरते हैं। अगर सवाल करते हैं, तो सही जवाब नहीं मिल पाता है। लेकिन, एलिट इंस्टीच्यूट में बच्चों को आने वाले सब्जेक्टिव परेशानी को जनरल लाइफ के एग्जांपल देकर समझाया जाता है।

एलिट इंस्टीच्यूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम ने बताया कि मेरे इंस्टीच्यूट में टीचर और स्टूडेंट के बीच के गैप को कम किया जाता है. फ्रेंडली माहौल होने की वजह से बच्चे आसानी से अपनी पढ़ाई कर पाते हैं, साथ ही उनके सवालों का सही- सही जवाब भी दिया जाता है।

विरासत में मिला शिक्षण कार्य

बेगूसराय के सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश से आगे बढ़ने के बाद अमरदीप झा गौतम पटना साइंस कॉलेज और बी.एच.यू. से अपनी पढ़ाई करने के बाद संघ लोकसेवा आयोग के लिये चुने गये, पर उन चीजों में मन नहीं लगने के कारण शिक्षण-कार्य में जुट गये।

अमरदीप झा गौतम के माँ और पिताजी भी बिहार-सरकार के सेवा-निवृत शिक्षक हैं, जिन्होनें लगभग 28 वर्षों तक बिहार की शिक्षा में अपना योगदान दिया। ऐसे में श्री गौतम ने शिक्षण का दायित्व विरासत के तौर पर ग्रहण किया।

प्रोफाइल

नाम- अमरदीप झा गौतम

प्रख्यात शिक्षाविद, फिजिक्स-टीचर, कॅरियर-काउंसलर, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीति-विश्लेषक, सामाजिक-चिंतक और एलिट इंस्टीच्यूट के संस्थापक और निदेशक ।

अमरदीप झा गौतम के बारे में कुछ खास बातें:

पिता - श्री तेज नारायण झा.

माता - श्रीमति नगीना झा.

जन्म तिथि - 12 फरवरी, बेगूसराय.

शौक - भौतिकी पढ़ाना, काव्य-लेखन और वाचन, गजल लिखना, किताबें पढ़ाना, सामाजिक-जागरुकता को बढ़ाना।

फेवरेट मूवी - गाइड, पेज थ्री, आँधी, ब्लैक, डोर, पिंजर, आमिर, बाहुबली, मणिकर्णिका.

बेस्ट एक्टर - अमिताभ बच्चन.

बेस्ट एक्ट्रेस - कोंकणा सेन और कंगना राणावत.

गजल -जगजीत सिंह और गुलाम अली.

फेवरेट नॉवेल - कर्मभूमि, गोदान, दिनकर और निराला की कवितायें, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, वाजपेयी जी की मेरी इक्यावन कवितायें का संग्रह शामिल हैं।

इंस्पायरिंग पर्सन - अमिताभ बच्चन, हरेक पल ऐसा लगता है कि वो कुछ न कुछ सीख रहे हैंङ्घ जिज्ञासा है।

आंधियां बहुत तेज हैं कुछ दीप झिलमिलाते हैं !

ये वही हैं जो अंधेरों से रौशनी चीर लाते हैं !!

वह फिजिक्स के विख्यात शिक्षक हैं और बच्चों को खेल-खेल में फिजिक्स को आसान बना कर समझाने के हुनर में माहिर हैं।

फिजिक्स से सोशल एक्टिविटी तक

एलिट इंस्टीच्यूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम को जब भी मौका लगता है कि वो सोसायटी के गंभीर मसलों पर अपनी कलम भी भिंगोने लगते हैं। फिजिक्स के जानकार अमरदीप झा गौतम एक साथ कई विधाओं में महारत रखते हैं। मसलन उनकी लिखी नाटक ह्यआम्रपालीह्न, ह्यसुदामाह्न, ह्यमेरी आवाजह्न, ह्यचंदर-पृथ्वीह्न, ह्यशबरीह्न ह्यसीताह्न और ह्यद्रौपदीह्न ने उनकी लेखनी और उनके विचारों को बहुआयामी सिद्ध किया।

वहीं उनकी कवितायें, शायरी की बेहद रोमांचकारी प्रस्तुति लोगों को झूमने पर विवश कर देती है।गाना लिखने का शौक और उसकी अदायगी एलिट इंस्टीच्यूट के एनुअल-फंग्शन में दिख जाती है।

एनुअल फंक्शन की मस्ती

एनुअल फंक्शन में अपने लिखे गीत, नाटक, भाषण और काव्य पाठ के साथ उसे बच्चों की आवाज में पिरोकर पेश करवाया जाता है।

समाज के विभिन्न-वर्गों के विभूतियों और देश के लिये समर्पित व्यक्तियों को सरस्वती-सम्मान, प्रतिभा-सम्मान और बाबा-नागार्जुन सम्मान से अलंकृत किया जाता है। स्वभाव से निर्मल अमरदीप झा गौतम ने बताया कि हरेक के अंदर एक्टर छिपा रहता है. ऐसे में उसे उभार कर निकालने का दायित्व भी हम जैसे लोगों का ही है, इसलिए इस दिन को भी बच्चे काफी यादगार बनाते हैं और मैं भी इसमें जमकर जुट जाता हूँ।

राजधानी दिल्ली में पूर्वांचल मोर्चा ने किया साड़ी वितरण का कार्यक्रम

पूर्वी दिल्ली। भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री विश्व के लोकप्रिय नेता आदरणीय नरेंद्र मोदी जी के 71 में जन्मदिवस की उपलक्ष में पूर्वांचल मोर्चा भाजपा शाहदरा जिला अध्यक्ष अमरेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में लक्ष्मी नगर विधानसभा के पांडव नगर मंडल के मंडावली स्थित सब्जी मंडी के पास महिला सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

पूर्वांचल मोर्चा अध्यक्ष ने कहा कि अरविंद केजरीवाल द्वारा छठ पूजा पर रोक लगाने का फैसला बिल्कुल गलत है। दिल्ली में बाजार पूरी तरह खुल चुका है और साथ ही कही पर भी आने जाने पर रोक नहीं है तो ऐसे में छठ पूजा पर रोक लगाने का क्या मतलब है। जिसमें वहां पर उपस्थित सभी माताओं और बहनों को उपहार स्वरूप सारी वितरण किया गया जिसकी संयोजिका श्रीमती मुन्नी ठाकुर थी ।100 महिलाओं को सारी वितरण किया गया जिसके मुख्य अतिथि जिनके हाथों से यह शुभम कार्य हुआ दिल्ली प्रदेश भाजपा के यशस्वी कर्मठ महामंत्री दिनेश प्रताप सिंह जी जिला महामंत्री एवं विधानसभा प्रभारी यशपाल कैंतुरा पूर्वांचल मोर्चा प्रदेश मंत्री रंजीत वर्मा जी भाजपा मंडल प्रभारी मुकेश स्वामी पार्षद गोविंद अग्रवाल मंडल अध्यक्ष अर्जुन कैंतुरा एवं पूर्वांचल मोर्चा के जिला के उपस्थित पदाधिकारी एवं पांडव नगर मंडल के सभी उपस्थित पदाधिकारी ने इससे कार्य में भागी बने।

जमूई से जम्मूकश्मीर स्थान्तर होने के बाद सीआरपीएफ कमांडेंट श्री मुकेश कुमार को दी गयी भावभीनी विदाई

जमूई एसपी ने कहा कमांडेंट मुकेश कुमार के सफल निर्देशन में नक्सलियों एवं अपराधियों के विरुद्ध निर्णायक जंग में रहा सफल योगदान

बिधुरंजन उपाध्याय

जमूई-बीते कई वर्षो से जमूई जिला में सीआरपीएफ 215 बटालियन में अपनी सेवा दे रहे कमांडेंट मुकेश कुमार का स्थानांतरण जम्मू कश्मीर हो गया.इस मौके पर जमूई मलयपुर सीआरपीएफ मुख्यालय में कमांडेंट मुकेश कुमार जी का तबादला होने पर एसपी सहित पुलिस अधिकारियों ने उन्हें भावभीनी विदाई दी.

कमांडेंट श्री मुकेश कुमार के जम्मूकश्मीर स्थान्तर होने के बाद जमूई में सीआरपीएफ के नए कमांडेंट जेपी मौर्या को उन्होंने अपना चार्ज सौप दिया. जमूई जैसे नक्सल प्रभावित इलाकों में बीते कई वर्षो से सीआरपीएफ का सफल नेतृत्व करने वाले कमांडेंट मुकेश कुमार मृदभाषी स्वभाव के अधिकारी थे.उन्होंने कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में कोरोना से जूझते हुए पुनः नक्सलियों के विरुद्ध निर्णायक लडाई में स्वस्थ होकर लोटे.हाल के वर्षो में सीआरपीएफ के सफल नेतृत्व में कई हार्डकोर नक्सली एवं अपराधी पुलिस के शिकंजे में धरे गए.सीआरपीएफ कमांडेंट ने जमूई को उग्रवाद मुक्त करने में अपना बेहतरीन योगदान महावीर की धरती जमूई को दिया है.इसके अलावे प्रशासनिक,आम जनता,मीडिया के दिलों में अपनी विशेष छाप छोड़ते हुए जमूई से विदा ले रहे है.केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को सुदूरवर्ती इलाकों के रहने वाले लोगो तक पहुँचाया. इस अवसर जमूई पुलिस अधीक्षक प्रमोद मंडल ने कहा की सीआरपीएफ 215 के कमाडेंट श्री मुकेश कुमार जी के सफल नेतृत्व में जिला पुलिस को बेहतरीन योगदान मिला.अर्द्धसैनिक बलों के साथ जिला पुलिस भी कदम-से कदम मिलाकर चली.श्री कुमार जहां भी रहे स्वस्थ रहे एवं खुश रहे.जमूई की पावन धरा आपको हमेशा याद रखेगी.उन्होंने कहा की सीआरपीएफ सुरक्षा के साथ-साथ गरीबों की सेवा भी करती है.इस अवसर पर एएसपी अभियान सुधांशू कुमार सहित सीआरपीएफ के आला अधिकारी भी मौजद रहे.

मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने दुमका से सोना-सोबरन धोती साड़ी वितरण योजना का किया शुभारंभ

कोविड-19 महामारी पर नियंत्रण के बाद अब विकास की बढ़ाई जा रही रफ्तार

सरकार सभी तबके के कल्याण और विकास के लिए बना रही कार्य योजना

किसान और गांव मजबूत होंगे, तभी झारखंड सशक्त बनेगा ।

राज्य के गरीबों, किसानों, महिलाओं, युवाओं, बुजुर्गों, अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग, और व्यवसायियों समेत सभी तबके का विकास हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है । इस सिलसिले में हर दिन नई कार्य योजना के साथ आगे बढ़ रहे हैं । कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गई हैं ।लोग इस योजनाओं से जुड़कर लाभ उठा सकते हैं । मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन ने आज दुमका के पुलिस लाइन में आयोजित सोना सोबरन धोती साड़ी वितरण योजना का शुभारंभ करते हुए यह बातें कहीं ।उन्होंने कहा की सरकार गरीबों को अतिरिक्त राशन कार्ड उपलब्ध कराने के साथ अब अनुदानित दर पर धोती साड़ी उपलब्ध करा रही है । इस योजना से राज्य के लाखों बीपीएल धारियों को लाभ मिलेगा । इस योजना के लिए सरकार ने 500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है । लाभुकों को साल में दो बार इस योजना के तहत धोती साड़ी या लूंगी दिया जाएगा ।

लाभुकों के बीच धोती साड़ी बांटे, किया संवाद

इस कार्यक्रम मे मुख्यमंत्री ने कुछ लाभुकों को धोती- साड़ी प्रदान किया । इस दौरान रांची, चाईबासा, गढ़वा, गिरिडीह और सरायकेला खरसावां जिले में धोती साड़ी वितरण को लेकर आयोजित कार्यक्रम दुमका में हो रहे राज्य स्तरीय कार्यक्रम के साथ ऑनलाइन जुड़े हुए थे । इसके अलावा अन्य जिलों में भी धोती साड़ी वितरण योजना का आयोजन किया गया । मुख्यमंत्री ने इस क्रम में लाभुकों के साथ संवाद भी किया ।

धरातल पर योजनाओं को तेजी से उतार रहे

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने कई योजनाएं शुरू की है । इन सभी योजनाओं को तेजी के साथ धरातल पर उतारा जा रहा है । इसी कड़ी में धोती- साड़ी वितरण योजना को फिर से शुरू किया गया है । उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को कई बार योजनाओं की सही जानकारी नहीं होती है । इस कारण वे इसका लाभ नहीं ले पाते हैं । उन्होंने लोगों से कहा कि वे सरकारी दफ्तरों में जाकर तमाम योजनाओं के बारे जानकारी लें और उससे जुड़े । उन्होंने जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से कहा कि वे ग्रामीणों को योजनाओं की जानकारी देने के साथ उसका लाभ देना भी सुनिश्चित करें ।

हर क्षेत्र में योजनाओं को पहनाया जा रहा अमलीजामा

मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि, पशुपालन , उद्योग, खेल मत्स्य पालन , मुर्गी पालन, सूकर पालन,डेयरी,

बागवानी सहित सभी सेक्टर के लिए नई योजना और नई नीति बना रही है । ताकि ,इसे बेहतर तरीके से क्रियान्वित किया जा सके । उन्होंने कहा कि किसान और गांव मजबूत होंगे, तभी झारखंड खुशहाल और सशक्त बनेगा । इसी सोच के साथ सरकार काम कर रही है ।

उद्योग धंधों के विकास के प्रति सरकार गंभीर

राज्य में निवेश के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है । यहां उद्योग लगाने के लिए निवेशक आएं, इसके लिए नई उद्योग प्रोत्साहन नीति बनाई गई है । उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति और जनजाति के जो युवा उद्योग लगाने के इच्छुक हैं, उन्हें सरकार की ओर से कई सुविधाएं और छुट जा रही हैं ।

युवाओं को रोजगार देने पर सरकार का विशेष फोकस

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में युवाओं को नौकरी और रोजगार देने पर सरकार का विशेष फोकस है । सरकार ने इस वर्ष को नियुक्ति वर्ष घोषित किया है , लेकिन कोविड-19 की वजह से काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा । लेकिन, झारखंड लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा के आयोजन के साथ इसकी शुरूआत हो चुकी है । अब यह प्रक्रिया अनवरत चलेगी । बड़े पैमाने पर युवाओं को रोजगार देंगे ।

खेल के क्षेत्र में अपार संभावनाएं

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में खेल के क्षेत्र में भी अपार संभावनाएं हैं । यही वजह है कि खेल और खिलाड़ियों के विकास के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं । राज्य में पहली बार खिलाड़ियों की सीधी नियुक्ति हुई है। हर जिले में खेल पदाधिकारियों को भी बहाल किया गया है । इसके अलावा खेल मैदानों को भी विकसित करने का काम तेजी से चल रहा है। खिलाड़ियों को वह हर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी ताकि वे राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर झारखंड देश का नाम रोशन कर सकें ।

अंतिम संस्कार के बाद होने वाली पूजा, तेरहवीं संस्कार भी केवल दिखावे के लिये रह गये है। तमाम परिवार अखबारों में विज्ञापन देने और षांतिपाठ से ही पूरी तेरहवीं संस्कार को पूरा मान लिया जाता है। कई परिवारों ने अब ह्यजूम एपह्य घर परिवार और दोस्तो को आपस में जोडकर अंतिम संस्कार को पूरा करते है। इस तरह से कोरोना ने पूरे अंतिम संस्कार को बदल दिया है। अंतिम संस्कार को लेकर होने वाले इस बदलाव का विरोध अब कोई वर्ग नहीं कर रहा है। इसे सहज रूप से सभी ने स्वीकार कर लिया है। अब इसका पालन भी लोग करना चाहते है।

हर जिले में खोले जा रहे हैं मॉडल स्कूल

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के गरीब बच्चे भी इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ सकें, इसके लिए सरकार ने सभी जिलों में एक एक मॉडल स्कूल खोलने का निर्णय लिया है ।अगले सेशन से इन सभी स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई शुरू हो जाएगी ।उन्होंने कहा कि अनुसूचित जनजाति के जो विद्यार्थी उच्च शिक्षा विदेशों में प्राप्त करना चाह रहे हैं, उन्हें सरकार की ओर से छात्रवृत्ति दी जा रही है। सरकार शिक्षा की बेहतरी के लिए लगातार कदम उठा रही है । मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि स्कूलों में बच्चों को अब सप्ताह में तीन की बजाय 6 दिन अंडे मिलेंगे ।उन्होंने ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे मुर्गी फार्म के माध्यम से अंडा का उत्पादन करें । सरकारी इन अंडो को खरीदेगी ।

बेहतर प्रबंधन से कोविड-19 नियंत्रण करने में मिली सफलता

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले लगभग डेढ़ सालों से पूरी दुनिया कोविड-19 वैश्विक महामारी से गुजर रही है । इस वजह से सारी व्यवस्थाएं अस्त व्यस्त हो गई , लेकिन बेहतर प्रबंधन के साथ हमने कोरोना को नियंत्रित करने में सफलता पाई है। लेकिन , अभी भी खतरा टला नहीं है ।ऐसे में सतर्क और सजग रहने की जरूरत है ।उन्होंने कहा कि अब जीवन को सामान्य बनाने के साथ राज्य में विकास की रफ्तार तेज की गई है ताकि योजनाओं का धरातल पर उतारने के साथ उसका लाभ लोगों को मिल सके .

कई योजनाओं का उद्घाटन शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने इस मौके पर 37 करोड़ 92 लाख 39 हजार 800 रुपए की 18 योजनाओं का ऑनलाइन उद्घाटन किया . वहीं, 2 अरब 30 करोड़, 76 लाख 7 हजार 600 रुपए की लागत वाली कई योजनाओं की आधारशिला रखी ।इस मौके पर मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना के लाभुकों को चेक सौंपा ।

इस कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद श्री शिबू सोरेन वित्त एवं खाद्य आपूर्ति मंत्री श्री रामेश्वर उरांव, कृषि मंत्री श्री बादल विधायक श्री स्टीफन मरांडी, श्री नलिन सोरेन और श्री बसंत सोरेन के अलावा ज़िला परिषद अध्यक्षा दुमका , पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री सुदर्शन मंडल, उपायुक्त श्री रविशंकर शुक्ला, पुलिस अधीक्षक श्री अंबर लकड़ा और जिला प्रशासन के अन्य अधिकारी उपस्थित थे ।

चुनावी मुद्दा-दो किमी की जगह 10 किमी जाना पड़ता है ग्रामीणों को

आमोद कुमार दुबे

चांदन प्रखंड के दक्षिणी कसवावसीला पंचायत के कई गांव तक जाने के लिए लोगो को दो किलोमीटर की कीचड़युक्त सड़क के कारण लगभग दस किलोमीटर तक घूम कर आना पड़ता है।यह नजारा करीब दस बर्षो से हल्की बारिश के बाद से शुरू होकर दुगार्पूजा तक बनी रहती है। इसमे सबसे अधिक परेशान प्रसव ग्रस्त महिला,बीमार व्यक्ति औ स्कूल आने जाने वाले छात्र छात्राओं को होती है।

जिसे गन्तव्य स्थान तक जाने के लिए दो किलोमीटर की जगह दस किलोमीटर का समय लेकर घर से निकलना पड़ता है। हर वर्ष ग्रामीणों द्वारा इस सड़क के मरम्मत की मांग उठाई जाती है, लेकिन आज तक किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। बल्कि चुनाव में सभी इस का वायदा जरूर कर जाते हैं, पर चुनाव खत्म होते ही फिर से इसे भुला दिया जाता है। जिस कारण सदा ही लोगों को इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय मुखिया उषा किरण, पंचायत समिति सदस्य विनोद बेसरा और जिला परिषद सदस्य कल्पना देवी द्वारा भी कई बार इस सड़क की समस्या को देखा गया।

लेकिन आज तक इसे बनाने की कोई पहल नहीं की गई है। इस सड़क के बन जाने के बाद धनोछी, पहाड़ नाथ मंदिर, गोंरा, सिमुलतला, चांदन कटोरिया पक्की सड़क, टेलवा और अन्य कई गांव में जाने के लिए लोगों की समस्या का समाधान हो जाएगा ।अभी इस गांव में जाने के लिए लोगों को भेलवा होकर सुईया से कुछ पूर्व वाली सड़क से गुजरना पड़ता है। जो करीब 10 किलोमीटर तक की विशेष यात्रा कर आता है ।ग्रामीण विनोद कुमार यादव, मुकेश यादव, रंजीत यादव, पंकज यादव, रमेश यादव, और गुड्डू यादव ने बताया कि बार बार चुनाव के वक्त सांसद और विधायक से लेकर पंचायत प्रतिनिधियों तक का ध्यान इस सड़क की ओर दिलाया जाता है।

लेकिन आश्वासन के अलावे कुछ भी नहीं मिलता है। वर्तमान विधायक मनोज यादव द्वारा भी इस सड़क को जल्दी निर्माण कराने का आश्वासन दिया गया है ।लेकिन आज तक कोई काम नहीं शुरू किया गया। इससे उम्मीद एक बार फिर से कमजोर पड़ती जा रही है।

इस संबंध में पूछने पर बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि उस सड़क की मरम्मत का काम करा दिया जाएगा। वहीं मुखिया उषा किरण ने भी जल्दी ही सड़क बनवाने की बात कही है। यह समस्या अब इस पंचायत चुनाव का मुख्य मुद्दा बनता जा रहा है। जिसका सही स्वरूप चुनाव में ही दिखाई देगा।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंदार पर्वत पर आकाशीय रज्जू मार्ग रोपवे का किया उद्घाटन

ओढनी डैम में किया नौका बिहार

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने21. सितंबर 2021 को बांका जिले के बौसी प्रखंड स्थित पौराणिक मंदार पर्वत पर नवनिर्मित आकाशीय रंज्जू मार्ग (रोपवे) का बटन दबाकर उद्घाटन किया. इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सिलावट का भी अनावरण किया मुख्यमंत्री ने पर्वत के शिखर पर पहुंचकर जैन मंदिर में भगवान महावीर की पूजा अर्चना कर बिहार वासियों के सुख शांति एवं समृद्धि की कामना की. जैन मंदिर दर्शन के पश्चात मुख्यमंत्री ने मंदार पर्वत के आसपास बसे इलाकों के संबंध में अधिक जानकारी विस्तृत से प्राप्त की. पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे खुशी है कि रोप वे का निर्माण हो गया रोप वे के निर्माण से अब कम समय में आम लोग मंदार के उच्च शिखर पर पहुंचकर आनंद ले सकेंगे. साथ ही साथ उन्होंने बांका जिले को पर्यटन के क्षेत्र में और विकसित बनाने की बात कही. उन्होंने आगे कहा कि व्यक्तिगत रूप से मुझे खुशी है और मुझे देखने का अवसर मिला था लेकिन अवसर उच्च शिखर पर जाने का नहीं मिला था. आज यह अवसर भी हमें प्राप्त हो गया इससे मुझे व्यक्तिगत काफी खुशी है. इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने मंदार पर्वत के निकट स्थित पापहरनी नामक सरोवर के मध्य बने श्री श्री 108 लक्ष्मी नारायण मंदिर में भी पूजा-अर्चना की और प्रसाद ग्रहण किया. मंदिर की परिक्रमा भी की मंदार में रोप वे के उद्घाटन के उपरांत मुख्यमंत्री आओढ़नी डैम पहुंचे जहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि बांका पर्यटन और पर्यावरण का केंद्र बनेगा. यह बहुत आकर्षक जगह है आसपास की पहाड़ी पर पौधारोपण कर इसे और सुंदर बनाया जा सकता है. इसके साथ ही इसके लिए काम कराया जाएगा. पर्यटन विकास के लिए और मोटर बोट जल्द मुहैया करा दिया जाएगा .यहआकर्षण का केंद्र है.निश्चित रूप से काफी संख्या में लोग आकर्षित होकर यहां पहुंचेंगे. मुख्यमंत्री घंटे से अधिक समय तक ओढनी डैम का जायजा लेने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे नीतीश कुमार उन्होंनेपत्रकारों से बातचीत कर रहे थे मंदार में रोप वे के उद्घाटन के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उप मुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद, जल संसाधन मंत्री संजय झा एवं मुख्य सचिव के साथ हेलीकॉप्टर से ओढनी जलाशय पहुंचे इसके बाद उन्होंने पर्यटन मंत्री नारायण प्रसाद, ग्रामीण कार्य मंत्री जयंत राज, सांसद विधायक ववभिागीय अधिकारी केसाथ नौकायन का आनंद लिया इसके साथ हीजल संसाधन मंत्री संजय झा ,ग्रामीण कार्य मंत्री जयंत राज, एवं बेलहर विधायक मनोज यादव ने वाटर स्कूटीका आनंद उठाया और कहा कि प्रशासन का यह कार्य सराहनीय है .आने वाले दिनों में ओढनी रोजगार का द्वार खोलेगा. पूरे कार्यक्रम में जिलाधिकारी सुहार्ष भगत के द्वारा सभा स्थल पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम और चाक-चौबंद व्यवस्था थी.अपने तमाम प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे. एवं एसपी अरविंद कुमार गुप्ता के द्वारा दोनों स्थानों पर सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था एवं स्वयं कमान संभालते हुए पैनी नजर रखी थी.

चांदन प्रखंड के जमुनी पुल को किया ध्वस्त

5000 की आबादी प्रभावित टूटा मुख्यालय से सम्पर्क

अमोद कुमार दुबे

बांका (चांदन): प्रखंड के बिरनिया पंचायत का जमुनी गांव का एक मात्र पुल लगातार तीन दिनों की बारिश में पूरी तरह टूट गया है। जिससे बिहार औ झारखंड के कई गांव का सम्पर्क मुख्यालय से पूरी तरह टूट गया है।इतना ही नही अब इस गांव तक आने जाने के लिऐ झारखंड से होकर आना होगा।इस पुल का निर्माण बर्ष 2016 में हुआ था।जिस पुल से होकर जमुनी,ऊपर जमनी, बिशनपुर, सलैया,मुलाडीह वाले करीब 5000 से अधिक ग्रामीणों को गांव से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है।अब इस पुल की गुणवत्ता पर भी सवाल उठने लगा है। कुछ ग्रामीण इसके लिए स्थानीय प्रशासन को भी जिम्मेदार मान रहे है।ग्रामीण जोतिन चौधरी,बाबूलाल चौधरी,राजेन्द्र राय,टेकन राय ने बताया कि जमनी गांव के ही जयकुमार चौधरी की देखरेख में इस पुल का निर्माण किया गया था। निर्माण के समय भी ग्रामीणों ने घटिया सामग्री का आरोप लगाया था।पर किसी ने ध्यान नही दिया।इतना ही नही माह जून में हुई लगातार बर्षा से पुल कई जगह क्षतिग्रस्त होकर बड़ा बड़ा दरार आ गया था। जिसकी खबर कई समाचार पत्रों में आने औ सभी पदाधिकारियों को जानकारी के बाबजुद मरम्मत के लिए कोई पहल नही की गई।जिस कारण यह पुल पूरी तरह टूट गया। उस वक्त अगर मरम्मत का काम कराया जाता तो ग्रामीणों को इस समस्या से बचाया जा सकता था। इस पुल के टूटने से गांव के स्कूल आने वाले शिक्षक जो गांव से बाहर रहते है उसे आने एवं यहां के बच्चों को उच्च विद्यालय जाने वाले छात्र और छात्राओं के अलावे बीमार व्यक्ति और प्रसवग्रस्त महिलाओं की काफी परेशानी गुजरना पड़ेगा।

फर्जी कागजात से बढ़ रहा है जमीनी विवाद

आमोद कुमार दुबे

चांदन अंचल कार्यालय, थाना औ जनता दरबार मे लगातार बढ़ रहे जमीनी विवाद के कारण प्रखंड में कई जगह मारपीट से लेकर हत्या तक की घटना हो चुकी है। जमीनी विवादे के कारण पर अगर ध्यान दिया जाय तो सिलजोरी, बिरनिया, कोरिया,चांदन पंचायत में सबसे अधिक मामला जमाबंदी से छेड़छाड़, उसमे ऊपरी लेखन,जमाबंदी का गायब हो जाना,एक एक जमीन का तीन से चार लोगों का रसीद कटना औ बड़ी संख्या में फर्जी हुकूमनामा,बंदोबस्त परवाना,भूदान के फर्जी कागजात के साथ सरकारी जमीन की फर्जी कागज के आधार पर बिक्री होना मुख्य कारण माना जा रहा है। इसी फजीर्वाड़े और जमाबंदी से छेड़छाड़ के मामले में अंचल कार्यालय के कई राजस्व कर्मचारी पूर्व में भी जेल की हवा खा चुके हैं। साथ ही कुछ भी नौकरी भी जा चुकी है। इसी का परिणाम आज भी अंचल और थाना को भुगतना पड़ रहा है ।खासकर यहां सबसे अधिक मामला सरकार द्वारा भूमिहीन हरिजन परिवार को घर बनाने के लिए जो भूमि बन्दोवस्त किया गया था उसकी धड़ल्ले से बिकी से भी उतपन्न हुआ है।यहां के कई हरिजन परिवार ऐसे है जो पूर्व के अंचलाधिकारी की मेहरबानी से कई कई बार सरकारी जमीन लेकर उसे बेच कर मालामाल हो गए है। हालांकि इस प्रकार की जमीन का दाखिल खारिज कम ही हुआ है। पर इस जमीन पर कई परिवार घर बना कर रह रहा है। इन सब जमीनों पर बड़ी संख्या में भू कारोबारी के मिलीभगत से विभाग पैदा हुआ है। एक एक जमीन के कई कई कागजात सामने आ रहे हैं जिस कारण अंचल और थाना को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है ।और अंततः यह मामला न्यायालय पर भी भारी हो रहा है। इतना ही नही चांदन मुख्यालय में चांदन हाट की जमीन,उच्च विद्यालय की जमीन के साथ गोचर भूमि पर भी भू माफिया की नजर है।जबकि कांवरिया पथ की अधिकतर जमीन के साथ वन विभाग की जमीन पर भी लोगो की नजर है। जिससे मुकदमे के साथ मारपीट हत्या तक कि कई घटना हो चुकी है और कई की तैयारी भी चल रही है।

इस संबंध में अंचलाधिकारी प्रशांत शांडिल्य ने बताया कि सभी जमीन का ऑनलाइन हो जाने के बाद इसकी सच्चाई सामने आ जाएगी, और सभी जमीन का विवाद धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा ।गलत कागजात के आधार पर जो भी जमाबंदी दर्ज कराई गई वह निश्चित रूप से रद्द करने की स्थिति में पहुंच जाएगा।

बुनियाद केंद्र बांका में अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस का आयोजन

कई वृद्धजन हुए सम्मानित

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर बांका स्थित बुनियाद केंद्र के प्रबंधक मुनमुन पाण्डे की अध्यक्षता में जिले के कई प्रबुद्ध वृद्धजनों को सम्मानित किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ सभी वृद्धजनों को माला पहनाकर सम्मानित करते हुए किया गया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अली इमाम एवं विशिष्ट अतिथि महेश्वरी प्रसाद यादव अधिवक्ता वरीय अधिवक्ता एवं समाज सेविका रंजना पंजिकार, जिला

प्रबंधक मुनमुन पांडे पांडे के द्वारा केक काटकर इस अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस का आगाज हुआ. इस अवसर पर फिजियोथैरेपिस्ट फैसल आलम ने फिजियो थेरेपी के बारे में जानकारी दी ध्रुव कुमार ने अब तो बोलो जी ने आंख संबंधित बीमारी एवं इससे बचाव की जानकारी दी मृत्युंजय कुमार काउंसलर इमोशनल सपोर्ट और गाइडेंस पर जानकारी दी इसके अतिरिक्त बुनियाद केंद्र में सभीवृद्धजनों का बी पी जांच के साथ-साथ आंखों की भी जांच की गई कार्यक्रम के समापन के उपरांत सभी वृद्धजनों को गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया. जिला प्रबंधक मुनमुन पांडे ने चर्चित बिहार को बताया कि जिले में चल रहे बुनियाद केंद्र में वृद्धजनों शारीरिक अपंगता से ग्रसित लोगों एवं विकलांगों के पुनर्वास की विशेष योजना है आंखों की जांच एवं चश्मा भी जरूरतमंद लोगों को वितरित किया जाता है.

कृषि भूमि सुधार के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अभूतपूर्व पहल

इतिहास इस तथ्य का प्रामाणिक दस्तावेज है कि भारत की भूमि पर एक समय दूध की नदियां बहती थीं, वहीं भारत की कृषि भूमि भी सोना उपजाती थी। इसका तात्पर्य यही है कि भारत भूमि की उर्वरा शक्ति बहुत ही अच्छी थी। भारत हर क्षेत्र में इतना सम्पन्न था कि विश्व का कोई भी देश उसके समक्ष ठहर नहीं सकता था। लेकिन आज भारत की कृषि भूमि का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। हालांकि वर्तमान में देश में इस बात के लिए गंभीरता पूर्वक चिंतन होने लगा है कि रासायनिक खादों के चलते कृषि भूमि में जो हानिकारक बदलाव आए हैं, उसे कैसे दूर किया जाए। इस बारे में देश के हित में समर्पण और निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने भूमि सुधार का बहुत बड़ा और आज के लिए अत्यंत आवश्यक अभियान हाथ में लिया है, जिसके अंतर्गत संघ के स्वयंसेवक गांव गांव जाकर किसानों से भूमि सुधार की दिशा में अभिनव पहल करेंगे।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकताओं द्वारा यह प्रयोग कोई नया नहीं है। संघ के अनेक कार्यकर्ता ग्रामीण उत्थान के कार्यो में लंबे समय से अपेक्षित परिणाम दे रहे हैं। देश के कई गांवों में खेती की दिशा में अभूतपूर्व परिवर्तन लाने वाले समर्पित कार्यकताओं की टोली ने मध्यप्रदेश के मोहद (नरसिंहपुर) और झिरी (राजगढ़) में ऐसे ही प्रयोग करके भूमि सुधार का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इन गांवों के किसान जैविक पद्धति से खेती कर जहां भूमि को स्वस्थ बना रहे हैं, वहीं पर्यावरण के प्रदूषण को समाप्त करने में भी योगदान दे रहे हैं। इतना ही नहीं आसपास की गांवों में यह जागृति भी ला रहे हैं कि किसान जैविक पद्धति के आधार पर कृषि कार्य करें। इससे जहां भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, वहीं मानव के लिए उत्पन्न होने वाले अनाज और सब्जियों की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार होगा। इतना ही नहीं जैविक खेती की अच्छाइयों से प्रभावित होकर देश के कई किसान इस ओर प्रवृत्त हुए हैं और अपेक्षा के अनुसार परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं। यह बात सही है कि कोई भी अच्छा काम करने के लिए समय भी लगता है, लेकिन अच्छे और सुव्यवस्थित रुप से काम किया जाए तो परिणाम अच्छे ही मिलेंगे। रासायनिक खादों के प्रयोग से हमें भले ही जल्दी फसल प्राप्त हो जाए, परंतु उस फसल को अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता। रासायनिक खादों के प्रयोग के चलते जो फसल प्राप्त होती है, उसे अधिक धन प्राप्त करने की दृष्टि से ही किया जाता है।जैविक खेती एक ऐसी पद्धति है, जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और खरपतवारनाशकों के स्थान पर जीवांश खाद के रूप में गोबर की खाद, हरी खाद, जैविक खाद आदि का उपयोग किया जाता है। इससे न केवल भूमि की उर्वरा शक्ति लंबे समय तक बनी रहती है, बल्कि पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता और कृषि लागत घटने व उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ने से कृषक को अधिक लाभ भी मिलता है। जैविक खेती वह सदाबहार कृषि पद्धति है, जो पर्यावरण की शुद्धता, जल व वायु की शुद्धता, भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाने वाली, जल धारण क्षमता बढ़ाने वाली, कृषक को कम लागत से दीर्घकालीन स्थिर व अच्छी गुणवत्ता वाली फसल प्रदान करती है, लेकिन धरती माता की पूजा करने वाला किसान ही जब खेती को अप्राकृतिक तरीके से करने के लिए बाध्य हो जाए तो फिर धरती माता का स्वास्थ्य बिगड़ेगा ही।

समय की मांग है भूमि सुपोषण अभियान

हम अगर प्रकृति के अनुसार चलेंगे तो प्रकृति हमारी रक्षा करेगी, लेकिन हमने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया तो संपूर्ण मानव जाति को प्रकृति ऐसा रूप भी दिखा सकती है, जहां से निकलने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान के चक्र को प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है। रासायनिक खादों के प्रयोग के चलते भारत की कृषि पर खतरनाक संकट आया है। इससे जहां भारतीय कृषि भूमि प्रभावित हो रही है, वहीं आम जनजीवन के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव हो रहा है। रासायनिक खादों के प्रयोग से जो भी फसल हमें प्राप्त हो रही है, वह जैविक खेती की तुलना में कई गुणा हानिकारक सिद्ध हुई है। इसी के कारण आज देश में कई किसान जैविक खेती की ओर अग्रसर हुए हैं। प्रायः देखा जा रहा है कि जिन किसानों ने जैविक खाद का प्रयोग करते हुए अपनी खेती प्रारंभ की है, उसके अपेक्षित परिणाम मिले हैं। खाद्यान्न, फल और सब्जियां प्राकृतिक स्वाद का अनुभव कराती हैं।

आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत विकसित किए गए गांव मोहद में जैविक खेती के बाद जो उत्पादन किया जा रहा है, उससे प्राप्त उपज में प्राकृतिक सुगंध है। हम आजकल कहते हैं कि अब सब्जियों में पहले जैसा स्वाद नहीं रहा, लेकिन जैविक आधार से की जा रही खेती में उत्पादित फलों में पहले जैसा ही स्वाद आने लगा है। इससे हमें शुद्ध आहार की प्राप्ति हो रही है, वहीं भूमि की उर्वरा शक्ति में आशातीत सुधार दिखाई देने लगा है। इससे प्रेरित होकर आसपास के गांव के किसान भी अब जैविक खेती की ओर अपने कदम बढ़ाने लगे हैं। चारों तरफ जैविक खेती के प्रयोग किए जा रहे हैं और किसानों को सफलता भी मिल रही है। प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था।भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रंथों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं, जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जो कि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे-धीरे कम हो गया तथा कृषि क्षेत्र का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ रहा है।

भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रम के सुखद परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं

वर्ष 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के स्थापित होने के बाद से आर्थिक क्षेत्र में सुधार कार्यक्रमों की घोषणा लगातार समय समय पर की जाती रही है। हालांकि, कोरोना महामारी के चलते पिछले दो वर्षों के दौरान भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में ही आर्थिक गतिविधियां विपरीत रूप से प्रभावित हुई हैं एवं देश में समय समय पर लागू किए गए विभिन्न सुधार कार्यक्रमों का सुखद परिणाम दिखाई नहीं दिया था। परंतु, अब भारत में कोरोना महामारी पर नियंत्रण प्राप्त कर लेने के बाद से आर्थिक गतिविधियों में तेजी से सुधार दृष्टिगोचर हो रहा है एवं अर्थव्यवस्था में स्पष्टत: आकार की बहाली दिखाई दे रही है।

सबसे पहिले तो कृषि क्षेत्र एवं उद्योग क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों ने जोर पकड़ना शुरू किया परंतु अब अगस्त 2021 माह में तो सेवा क्षेत्र में भी, जो कोरोना महामारी के दौरान विपरीत रूप से सबसे अधिक प्रभावित हुआ था, आर्थिक गतिविधियों में सुधार दिखाई दिया है। अगस्त 2021 माह के दौरान सेवा क्षेत्र में पिछले 18 माह के प्रत्येक माह में हुई वृद्धि दर की तुलना में सबसे अधिक वृद्धि दर दर्ज की गई है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का सबसे अधिक योगदान रहता है। देश में तेजी से हो रहे वैक्सिनेशन के चलते एवं उपभोक्ताओं के क्रियाशील होने के कारण सेवा पीएमआइ इंडेक्स जुलाई 2021 माह के 45.4 की तुलना में अगस्त 2021 माह में बढ़कर 56.7 पर पहुंच गया है। इस इंडेक्स के 50 अंको के ऊपर जाने का आश्य होता है कि इस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों में विस्तार हो रहा है।

कर संग्रहण के मोर्चे पर भी बहुत अच्छी खबर आई है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के अप्रेल - 2 सितम्बर 2021 की अवधि के दौरान प्रत्यक्ष कर संग्रहण में 95 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के अप्रेल झ 2 सितम्बर 2020 की अवधि के दौरान 1.9 लाख करोड़ रुपए का प्रत्यक्ष कर संग्रहण हुआ था जो इस वर्ष इसी अवधि के दौरान बढ़कर 3.7 लाख करोड़ रुपए का हो गया है। यह आकर्षक वृद्धि दर आर्थिक क्षेत्र में किए गए सुधारों के कारण आर्थिक गतिविधियों में हुई तेजी एवं अनुपालन में हुए सुधार के चलते सम्भव हुई है।उधर, वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की वसूली में भी लगातार वृद्धि देखने में आ रही है एवं यह अब प्रति माह एक लाख करोड़ रुपए से अधिक के स्तर पर पहुंच गई है। अप्रेल 2021 माह में तो वस्तु एवं सेवा कर की वसूली, पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए, 1.41 लाख करोड़ रुपए की रही थी एवं अगस्त 2021 माह में इस मद से 1.16 लाख करोड़ रुपए का कर संग्रहण किया गया है।

कर संग्रहण में दर्ज की गई आकर्षक वृद्धि दर के चलते सबसे अच्छी खबर तो राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण के मोर्चे पर आई है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के प्रथम चार माह, अप्रेल-जुलाई 2021, की अवधि

इंजीनियरिंग वर्क शाप की आड़ में चलाई जा रही थी मिनी गन फैक्ट्री का हुआ उदभेदन

मुंगेर से जुड़ा जमुई का तार, मिनी गन फैक्ट्री से हथियारों का जखीरा बरामद

मुंगेर का रहने वाला है दूकान संचालक,6 माह से बना रहा था हथियार

4 घंटे तक चली छापेमारी में 30 अर्धनिर्मित हथियार सहित एक तैयार पिस्टल हुआ बरामद :-एसपी जमूई

हथियार बनाने की मशीन को किया गया जब्त,कई उपकरण भी हुआ बरामद

तीन लोगों को गिरफ्तार कर पुलिस कर रही है पूछताछ

बिधुरंजन उपाध्याय

जमुई-शहर के अतिथि पैलेस मोड़ के समीप बुधवार को जिला पुलिस बल द्वारा मिनी गन फैक्ट्री का उद्भेदन किया गया। साथ ही इस दौरान भारी मात्रा में अर्धनिर्मित पिस्टल के साथ तीन लोगों को गिरफतार किया गया है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार मंडल द्वारा टाउन थाना परिसर में प्रेस-वार्ता आयोजित कर दी। उन्होंने बताया कि बुधवार की सुबह टाउन थाना की पुलिस अतिथि पैलेस मोड़ के समीप गश्ती कर रही थी। तभी एक मोटरसाइकिल सवार युवक पुलिस को देखते ही बाइक घुमाकर भागने लगा। पुलिस द्वारा उक्त युवक का पिता किया गया तो युवक मां अंबे रिबोरिंग एंड इंजीनियरिंग वर्कशाप में घुस गया। पुलिस द्वारा उक्त युवक को वर्कसोप में घुसकर गिरफ्तार किया। युवक के पास से एक लोडेड देशी कट्टा सहित तीन जिंदा कारतूस बरामद किया गया। इसी दौरान पुलिस ने देखा की वर्क सोप के कारीगरों द्वारा पिस्टल का बट तैयार कर रहे थे। इसकी सूचना वरीय पदाधिकारी को दी गयी। सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार मंडल, एसडीपीओ डॉ राकेश कुमार, आशिष रजन, टाउन थानाध्यक्ष चंदन कुमार दल-बल के साथ मौके स्थल पर पहुंचे। छानबीन के दौरान पुलिस को

जिसमें 30 अर्धनिर्मित हथियार सहित एक तैयार पिस्टल बरामद किया गया। साथ ही हथियार बनाने की मशीन के अलावा अन्य उपकरणों को भी जब्त किया गया है। इसके अलावा पुलिस दूकान संचालक मुंगेर जिले के दलहट्टा निवासी प्रमानंद शर्मा के साथ मुंगेर के काशिम बाजार निवासी बामू शर्मा और लखीसराय के खैरी गांव निवासी राजेश मिस्त्री को गिरफ्तार कर पुलिस पूछताछ कर रही है। तकरीबन 4 घंटे तक पुलिस द्वारा की गई छापेमारी में भारी मात्रा में हथियार बनाने का सामग्री भी बरामद किया गया है। एसपी द्वारा बताया गया

की मुंगेर जिले के दलहट्टा निवासी परमानंद शर्मा 2019 में किराए पर सिकंदरा के विनय साव का मकान लिया था और वह मां अंबे के नाम से रिबोरिंग एंड इंजीनियरिंग वर्कशाप चला रहा था। इसी वर्कशाप की आड़ में छह महीने से अवैध हथियार बनाने का कारोबार चल रहा था। मुंगेर के ही बबलू गुप्ता प्रत्येक दूसरे दिन कारोबार के लिए निर्मित हथियार ले जाता था। पुलिस गन फैक्ट्री से संबंध रखने वाले सभी लोगों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है। पूछताछ के दौरान पुलिस के समक्ष कई बातें सामने आई हैं। पुलिस सभी बिंदुओं पर अनुसंधान कर रही है। छापेमारी अभियान में एसपी, टाउन थानाध्यक्ष सहित एसआई ध्रुव कुमार, रविशंकर कुमार सहित अन्य पुलिस पदाधिकारी व जवान शामिल थे।

पंचायत चुनाव से कारोबार का जुड़ रहा तार

पंचायत चुनाव में हथियार के इस्तेमाल करने की संभावना जताई जा रही है। इसकी पुष्टि एसपी प्रमोद कुमार मंडल ने भी की है। उन्होंने भी बरामद हथियार को पंचायत चुनाव से कहीं न कहीं संबंध होने की बात कही है। फिलहाल इस मामले में और भी खुलासा होने की संभावना है। कई लोगों का नाम भी सामने आ सकता है।

कार के सीट में तहखाना बनाकर किया जाता था गन का सप्लाय : एसपी

शहर के अतिथि पैलेस के समीप बुधवार को जिला पुलिस बल द्वारा मिनी गन फैक्ट्री के उद्भेदन के बाद टाउन थाना में कांड संख्या 424/21 दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया है। उक्त जानकारी पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार मंडल द्वारा प्रेस-वार्ता के दौरान दी गयी। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार युवकों के निशानदेही पर छापेमारी कर मुख्य संरगना को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उन्होंने बताया छापेमारी में जब्त टाटा इंडिका कार की जांच के बाद पता चला कि कार के सीट में तहखाना बनाकर अर्धनिर्मित पिस्टल को मुंगेर भेजा जाता था जहां उसका फिनिशिंग का कार्य किया जाता था। पुलिस अधीक्षक द्वारा बताया गया कि जिला पुलिस बल के लिए ये एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि इस तरह के किसी भी गन फैक्ट्री को जमुई में पनपने नहीं दिया जाएगा। पुलिस द्वारा मिनी गन फैक्ट्री से अर्धनिर्मित पिस्टल 30, अर्धनिर्मित पिस्टल बॉडी 30, बैरेल 30, जेरनेटर 1, ड्रील मशीन बड़ा एक , छोटा 1, टाटा इंडिका कार 1, होंडा साइन मोटरसाइकिल 1 बरामद किया है। उन्होंने इस उद्भेदन में शामिल सभी सदस्यों को पुरुस्कृत करने की बात कही।

बच्चों पर बढ़ते अपराधों पर नियंत्रण हो

कोरोना काल के पूर्णबंदी के दौरान बाल विवाह, यौन शोषण, अपराध और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के मामलों में चिंताजनक बढ़ोतरी दर्ज हुई। नए आंकड़ों के अनुसार पिछले साल रोज करीब साढ़े तीन सौ बच्चों के साथ आपराधिक घटनाएं घटीं। हालांकि अध्ययनकर्ताओं और राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो ने इसके पीछे बड़ी वजह कोरोना काल में हुई बंदी और कामकाज के ठप पड़ जाने, परिवारों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाने को माना है। बच्चें समाज में ही नहीं, अपने घरों में भी असुरक्षित है।

बच्चों पर हो रहे अपराध एक सभ्य समाज पर बदनुमा दाग है। जबकि एक सभ्य समाज की पहचान इस बात से भी होती है कि उसमें बच्चों के साथ कैसा व्यवहार होता है, वे खुद को कितना सुरक्षित महसूस करते हैं। इस दृष्टि से हम सदा से पिछड़े नजर आते रहे हैं। कहते हैं कि समाज में शिक्षा के प्रसार से हिंसा और अपराध जैसी घटनाएं स्वतः कम होने लगती हैं। भारत में शिक्षा की दर तो बढ़ रही है, मगर हिंसा और अपराध के मामले भी उसी अनुपात में बढ़े हुए दर्ज होते हैं, यह शिक्षा की विसंगति का ही परिणाम है। सबसे चिंता की बात है कि भारत में बच्चों के साथ हिंसक व्यवहार, यौन अत्याचार एवं उनके अधिकारों के हनन पर अंकुश नहीं लग पा रहा, जो चिन्ताजनक होने के साथ शासन-व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है।

हाल ही में स्कूल ऑफ बिजनेस में सैंटर फॉर इनोवेशन एटरप्रेन्योरशिप की मदद से एक सर्वे ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति का आकलन करने के लिये किया गया था। इस सर्वे में समभागी बने लोगों में से 93 फीसदी लोगों ने यही माना है कि ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों के सीखने और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ा है, घरों में कैद होकर भी वे ऑनलाइन अपराधों के शिकार हुए, उनमें मानसिक विकृतियां पनपी। इससे बच्चों पर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ा, जिससे उनकी सुप्त शक्तियों का जागरण एवं जागृत शक्तियों का संरक्षण एवं संवर्धन अवरूद्ध हुआ है। बच्चों के समग्र विकास की संभावनाओं का प्रकटीकरण रूका है। लाखों छात्रों के लिए स्कूलों का

बंद होना उनकी शिक्षा में अस्थाई व्यवधान बना है जिसके दूरगामी प्रभाव का आकलन धीरे-धीरे सामने आने लगा है। बच्चों का शिक्षा से मोहभंग हो गया। बच्चें अपराध एवं यौन शोषण के शिकार हुए है। ये स्थितियां गंभीर एवं घातक होने के साथ चुनौतीपूर्ण बनी है। सत्य को ढका जाता है या नंगा किया जाता है पर स्वीकारा नहीं जाता। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। बच्चों के साथ होने वाले अपराधों के संबंध में ऐसा ही देखने को मिला है।

भले ही ताजा आंकड़ों में पहले की तुलना में आपराधिक मामलों में कुछ कमी दर्ज हुई है, मगर वह संतोषजनक नहीं है। कई मामलों में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं बढ़ी हैं। मनोचिकित्सक अरुणा ब्रूटा के अनुसार, बच्चों के साथ यौन शोषण करने वाले लोग सेक्शुअल डिसऑर्डर का शिकार होते हैं। उन्हें बच्चों के यौन शोषण से मजा मिलता है और अपनी इन हरकतों का सबूत मिटाने के लिए वे बच्चों की हत्या तक कर देते हैं। बच्चों को टारगेट करने वाले लोगों को पीडोफाइल कहा जाता है। इनका रुझान शुरू से बच्चों की तरफ होता है। वे वयस्कों के बजाय बच्चों को देखकर उत्तेजित होते हैं। ऐसे ही बीमार मानसिकता के लोगों ने पूर्णबंदी के दौरान बच्चों पर विकृत मानसिकता के हमले जहां-जैसे मौके मिले किये। जब कल-कारखाने बंद रहने और उसके बाद भी बहुत सारे रोजगार सुचारुरूप से बहुत दिनों तक नहीं चल पाने की स्थिति में बच्चों के साथ काम की जगहों पर दुर्व्यवहार की घटनाएं नहीं होने पाईं, इसलिए आंकड़े पहले की तुलना में कुछ घटे हुए दर्ज हुए। बंदी की वजह से बच्चों को घरों में बंद रहने पर मजबूर होना पड़ा था, ऐसे में उनके माता-पिता का अनुशासन और हिंसक व्यवहार कुछ अधिक देखा गया। यह खुलासा बंदी के दौरान हुए अन्य अध्ययनों से हो चुका है। ऐसे में बाल अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्थाओं और सरकारी महकमों के लिए यह चुनौती बनी हुई है कि इस पर कैसे काबू पाया जाए। यों बाल अपराध, बाल अधिकारों के हनन, बेवजह प्रताड़ना, बाल मजदूरी, यौन शोषण आदि के खिलाफ कड़े कानून हैं, मगर उनका कितना पालन हो पा रहा है, इसका अंदाजा ताजा आंकड़ों से लगाया जा सकता है। बच्चों के खिलाफ आपराधिक घटनाओं के मामले में मध्यप्रदेश अव्वल है, फिर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और बिहार हैं।

पीडोफाइल खास योजना के तहत बच्चों पर अपराधों को अंजाम देते हैं। वे अक्सर बच्चों के आस-पास रहने कोशिश करते हैं। वे ज्यादातर स्कूलों या ऐसी जगहों को चुनते हैं, जहां बच्चों का आना-जाना ज्यादा हो। ज्यादातर मामलों में बच्चों को शिकार बनाने वाले उनके करीबी ही होते हैं। ये स्कूल बस का ड्राइवर, कंडक्टर, शिक्षक या स्कूल का कोई कर्मचारी हो सकते हैं। दूसरी तरह के लोग घर के भी हो सकते हैं चाहे वे चाचा, मामा, पड़ोसी भी हो सकता है। दूसरी तरह के ये लोग ज्यादा खतरनाक होते हैं। ऐसे लोग आसानी से शक के दायरे में नहीं आते। कई बार बच्चों के शिकायत करने पर भी अभिभावक बच्चों का यकीन नहीं करते। भारतीय समाज में बच्चों के प्रति यौन व्यवहार एक आम चलन की तरह देखा जाता है। बच्चों के यौन शोषण पर काबू पाना तो दिन पर दिन कठिन होता जा रहा है। इसलिए हर बार की तरह महज आंकड़ों पर चिंता जाहिर करने के बजाय ऐसे अपराधों की जड़ों पर प्रहार करने के उपायों पर विचार करने की जरूरत है।

बहुत सारे गरीब परिवारों के बच्चे कानूनी प्रतिबंध के बावजूद कालीन, पटाखे बनाने वाले कारखानों, चाय की दुकानों, ढाबों और घरेलू नौकर के रूप में काम करते पाए जाते हैं। वहां उनके मालिक न तो उनकी बुनियादी और अनिवार्य सुविधाओं का ध्यान रखते हैं और न खाने-पीने का। ऊपर से उनके साथ मार-पिटाई भी करते हैं। बच्चें अपने अभिभावकों की पिटाई के भी शिकार होते हैं। बहुत सारे लोगों की धारणा है कि मारने-पीटने से बच्चे अनुशासित होते हैं, जबकि अनेक मौकों पर, अनेक अध्ययनों से उजागर है कि मार-पीट का बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उनमें अपराध बोध पनपता है। बच्चों के खिलाफ हो रहे अपराध, खासतौर पर यौन अपराध के ज्यादातर मामले सामने नहीं आ पाते, क्योंकि बच्चे समझ ही नहीं पाते कि उनके साथ कुछ गलत हो रहा है। अगर वे समझते भी हैं तो डांट के डर से अभिभावकों से इस बारे में बात नहीं करते हैं। महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय के अध्ययन में भी यही बात सामने आई है। बच्चों पर बढ़ रहे अपराधों पर नियंत्रण पाने के लिये व्यापक प्रयत्नों की अपेक्षा है। बच्चों से खुलकर बात करें। उनकी बात सुने और समझें। अगर बच्चा कुछ ऐसा बताता है तो उसे गंभीरता से लें। इस समस्या को हल करने की कोशिश करें। पुलिस में बेझिझक शिकायत करें। बच्चों को ‘गुड टच-बैड टच’ के बारे में बताएं- बच्चों को बताएं कि किस तरह किसी का उनको छूना गलत है। बच्चों के आस-पास काम करने वाले लोगों की पुलिस वेरिफिकेशन होनी चाहिए। जब कोई अपराध करता हुआ पकड़ा जाता है तो उसे फास्ट ट्रैक कोर्ट के जरिए जल्द से जल्द सजा मिलनी चाहिए। अपराधियों को जल्द सजा समाज में सख्त संदेश देती है कि ऐसा अपराध करने वाले बच नहीं सकते। बाल यौन अपराधियों को सजा देने के लिए खास कानून है- पॉक्सो यानि प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंसेस। इस कानून का मकसद बच्चों के साथ यौन अपराध करने वालों को जल्द से जल्द सजा दिलाना है, इस कानून का सही परिप्रेक्ष्य में तत्परता से पालन होना चाहिए। बच्चों के खिलाफ अपराध के ज्यादा मामले बाल सुरक्षा अधिनियम 2012 आने के बाद सामने आए हैं। पहले अपराधों को दर्ज नहीं कराया जाता था लेकिन अब लोगों में जागरूकता आने के कारण बच्चों के खिलाफ अपराध के दर्ज मामलों में बढ़ोतरी देखी गई है।

विश्व में मुक्तिधाम के रूप में विख्यात पितरों के श्राद्ध और तर्पण के लिए

बिहार के गया धाम से श्रेष्ठ कोई दूसरा स्थान नहीं

अनुभव रंजन

मान्यता के अनुसार गया में भगवान विष्णु पितृ देवता के रुप में निवास करते हैं। कहा जाता है कि गया में श्राद्ध कर्म करने के पश्चात भगवान विष्णु के दर्शन करने से व्यक्ति को पितृ, माता और गुरु के ऋण से मुक्ति मिल जाती है। यहां अति प्राचीन विष्णुपद मंदिर स्थित है। इस मंदिर में भगवान विष्णु के पदचिन्ह आज भी मौजूद हैं। ये मंदिर फल्गु नदी के किनारे स्थित है। इसे धर्मशीला के नाम से जाना जाता है। इनके दर्शन से व्यक्ति को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

काले पत्थर का यह वर्तमान सुन्दर और चित्ताकर्षक मन्दिर प्रातः स्मरणीया इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई का बनाया हुआ है। वर्तमान विष्णुपद मन्दिर का निर्माण काल १७८० ई0 है। मंदिर की उँचाई १०० फीट है यह मंदिर गया स्टेशन से २ कि.मी. की दुरी पर है। मंदिर के अंदर गयासुर की प्रार्थना के अनुसार भगवान विष्णु का चरण चिन्ह है। चरण चिन्ह १३ ईंच का है और उँगलिया उतर की ओर है। मंदिर का ऊपरी भाग गुम्बजाकार है जो देखने में बहुत सुन्दर मालूम होता है। मंदिर के ऊपर शिखर पर बालगोविन्द सेन नामक एक गयापाल की चढ़ाई हुई १ मन सोने की ध्वजा फहराती है। मंदिर के भीतरी भाग में चांदी से आवेष्ठित एक अष्ट-कोण कुण्ड में विष्णु का चरण चिन्ह है। मंदिर के सामने के भाग में एक सभा मण्डप है। चरण के ऊपर एक चांदी का छत्र सुषोभित है। यह छत्र बालगोविन्द सेन का दान है और विष्णुपद का चांदी का आर्ध्य भी उन्हीं का दान है। मंदिर के सभा-मण्डप मे और उसके बाहर दो बड़े घंटे लटक रहे हैं। यहां पर एक विचित्र बात का उल्लेख आवशयक प्रतीत होता है और वह यह कि सभा - मण्डप की छत से पानी की बून्द टपका करती है। जन-श्रुति के अनुसार जिस तीर्थ का नाम हृदय में रखकर आप हाथ पसारिये आपके हाथ में दो एक बून्द पानी जरूर गिरेगी। मंदिर में प्रतिदिन रात्रि में भगवद्चरण का मलयागिरी चन्दन से श्रृंगार होता है। रक्त चन्दन से चरण चिन्ह पर शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि अंकित किए जाते हैं। पुण्यमास में जैसे वैशाख, कार्तिक आदि में श्रृंगार पश्चात विष्णु सहस्त्रनाम सहित विष्णु चरण पर तुलसीदल अर्पण दर्शनीय शोभा है।

सच बात तो यह है कि गया में पिण्डदान से पितरों की अक्षय तृप्ति होती है। एक कोस क्षेत्र गया-सिर माना जाता है, ढाई कोस-तक गया है और पाँच कोस तक गया-क्षेत्र है। इसी के मध्य में सब तीर्थ आ जाते है। इस मंदिर के निर्माण के संबंध में कोई जानकारी नहीं मिल पाई लेकिन कहा जाता है कि श्रीराम और माता सीता इस स्थान पर अवश्य आए थे। भगवान विष्णु के पदचिन्ह मंदिर के केंद्र में स्थित हैं। हिंदू धर्म के अनुसार ये पदचिन्ह उस समय के हैं जब भगवान विष्णु ने गयासुर दैत्य की छाती पर पैर रखकर उसे धरती के अंदर धकेल दिये थे। विष्णुपद पदचिन्ह के चारों और चांदी से जड़ा बेसिन है। मंदिर के अंदर एक अविनाशी

बरगद का वृक्ष है, जिसे अक्षय वट कहा जाता है। इस वृक्ष के नीचे मृत व्यक्ति की अंतिम रस्मे की जाती है। पुराणों में भी गया में पितरों का श्राद्ध करने का उल्लेख मिलता है।

पुराणों के अनुसार गयासुर नामक राक्षस भगवान से वर प्राप्त करके उसका दुरुपयोग कर देवताओं को परेशान करना शुरू कर दिया। गयासुर के अत्याचर से दुखी देवताओं ने भगवान विष्णु की शरण में जाकर उनसे प्रार्थना की थी कि वे उन्हें गयासुर के अत्याचार से मुक्ति दिलाएं। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने अपना दायां पैर उसके सिर पर रख कर उसे धरती के अंदर धकेल दिया। राक्षस को जमीन के अंदर धकेलने के बाद भगवान विष्णु के पदचिन्ह के निशान सतह पर ही रह गए जो आज भी मौजूद हैं। बाद में भगवान विष्णु ने गया के सिर पर एक पत्थर रखकर उसे मोक्ष प्रदान किया।

गया के विष्णुपद मंदिर में वह पत्थर आज भी मौजूद है। भगवान विष्णु द्वारा गयासुर का वध करने के बाद उन्हें गया तीर्थ में मुक्ति दाता माना गया। कहा जाता है कि गया में श्राद्ध और तर्पण करने से व्यक्ति को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। गया से लगभग आठ किलोमीटर की दूर प्रेतशिला में पिंडदान करने से पितरों के उद्धार होता है।

विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिह्न महर्षि मरीचि की पत्नी माता धर्मवत्ता की शिला पर है। राक्षस गयासुर को स्थिर करने के लिए धर्मपुरी से माता धर्मवत्ता शिला को लाया गया था, जिसे गयासुर पर रख भगवान विष्णु ने अपने दाहिने पैर से दबाया। इसके बाद शिला पर भगवान के चरण चिह्न है। समूचे विश्व में विष्णुपद ही एक ऐसा स्थान है, जहां भगवान विष्णु के चरण का साक्षात दर्शन कर सकते हैं।

यहां चरण के स्पर्श से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं। वहीं यह मंदिर सोने को कसने वाला पत्थर कसौटी से बना है, जिसे जिले के अतरी प्रखंड के पत्थरकट्टी से लाया गया था। इस मंदिर के सभा मंडप में ४४ स्तंभ हैं। ५४ वेदियों में से १९ वेदी विष्णुपद में ही हैं, जहां पर पितरों के मुक्ति के लिए पिंडदान होता है। यहां सालों भर पिंडदान होता है।

अरण्य वन बना सीताकुंड विष्णुपद मंदिर के ठीक सामने फल्गु नदी के पूर्वी तट पर स्थित है सीताकुंड। यहां स्वयं माता सीता ने महाराज दशरथ का पिंडदान किया था। पौराणिक काल में यह स्थल अरण्य वन जंगल के नाम से प्रसिद्ध था। भगवान श्रीराम, माता सीता के साथ महाराज दशरथ का पिंडदान करने आए थे, जहां माता सीता ने महाराज दशरथ को बालू फल्गु जल से पिंड अर्पित किया था, जिसके बाद से यहां बालू से बने पिंड देने का महत्व है।

१८वीं शताब्दी में महारानी अहिल्याबाई ने मंदिर का कराया था जीर्णोद्धार विष्णुपद मंदिर के शीर्ष पर ५० किलो सोने का कलश और ५० किलो सोने की ध्वजा लगी है। गर्भगृह में ५० किलो चांदी का छत्र और ५० किलो चांदी का अष्टपहल है, जिसके अंदर भगवान विष्णु की चरण पादुका विराजमान है। इसके अलावे गर्भगृह का पूर्वी द्वार चांदी से बना है। वहीं भगवान विष्णु के चरण की लंबाई करीब ४० सेंटीमीटर है। बता दें कि १८वीं शताब्दी में महारानी अहिल्याबाई ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। पर यहां भगवान विष्णु का चरण सतयुग काल से ही है।

विष्णुपद कथा

गया तीर्थ में पितरों का श्राद्ध और तर्पण किए जाने का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। पुराणों के अनुसार, गयासुर नाम के एक असुर ने घोर तपस्या करके भगवान से आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। भगवान से मिले आशीर्वाद का दुरुपयोग करके गयासुर ने देवताओं को ही परेशान करना शुरू कर दिया। गयासुर के अत्याचार से दुःखी देवताओं ने भगवान विष्णु की शरण ली और उनसे प्रार्थना की कि वह गयासुर से देवताओं की रक्षा करें। इस पर विष्णु ने अपनी गदा से गयासुर का वध कर दिया। बाद में भगवान विष्णु ने गयासुर के सिर पर एक पत्थर रख कर उसे मोक्ष प्रदान किया।गया में आज भी विष्णुजी का वह चमत्कारी पत्थर .गया के प्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर में वह पत्थर आज भी मौजूद है। भगवान विष्णु द्वारा गदा से गयासुर का वध किए जाने से उन्हें गया तीर्थ में मुक्तिदाता माना गया। कहा जाता है कि गया में यज्ञ, श्राद्ध, तर्पण और पिंड दान करने से मनुष्य को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। वहीं गया शहर से करीब आठ किलामीटर की दूरी पर स्थित प्रेतशिला में पिंडदान करने से पितरों का उद्धार होता है।प्रेतशिला पर्वत का विशेष महत्व है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इस पर्वत पर पिंडदान करने से अकाल मृत्यु को प्राप्त पूर्वजों तक पिंड सीधे पहुंच जाता है जिससे उन्हें कष्टदायी योनियों से मुक्ति मिल जाती है। शास्त्रों के अनुसार पिंडदान के लिए तीन जगहों को सबसे विशेष माना गया है। पहला है बद्रीनाथ जहां ब्रह्मकपाल सिद्ध क्षेत्र में पितृदोष मुक्ति के लिए तर्पण का विधान है। दूसरा है हरिद्वार जहां नारायणी शिला के पास लोग पूर्वजों का पिंडदान करते हैं और तीसरा है गया जी।

नारी कब तक बेचारगी का जीवन जीयेगी ?

हम तालिबान-अफगानिस्तान में बच्चियों एवं महिलाओं पर हो रही क्रूरता, बर्बरता शोषण की चचाओं में मशगूल दिखाई देते हैं लेकिन भारत में आए दिन नाबालिग बच्चियों से लेकर वृद्ध महिलाओं तक से होने वाली छेड़छाड़, बलात्कार, हिंसा की घटनाएं पर क्यों मौन साध लेते हैं? इस देश में जहां नवरात्र में कन्या पूजन किया जाता है, लोग कन्याओं को घर बुलाकर उनके पैर धोते हैं और उन्हें यथासंभव उपहार देकर देवी मां को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं वहीं इसी देश में बेटियों को गर्भ में ही मार दिये जाने एवं नारी अस्मिता एवं अस्तित्व को नौंचने की त्रासदी भी है। इन दोनों कृत्यों में कोई भी तो समानता नहीं बल्कि गजब का विरोधाभास दिखाई देता है।

दुनियाभर में महिलाओं के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिये जागरूकता एवं आन्दोलनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। हमारे देश में भी महिलाओं की स्थिति, कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती घटनाएं, लड़कियों की तुलना में लड़कों की बढ़ती संख्या, तलाक के बढ़ते मामले, गांवों में महिला की अशिक्षा, कुपोषण एवं शोषण, महिलाओं की सुरक्षा, महिलाओं के साथ होने वाली बलात्कार की घटनाएं, अश्लील हरकतें और विशेष रूप से उनके खिलाफ होने वाले अपराधों पर प्रभावी चर्चा एवं कठोर निर्णयों से एक सार्थक वातावरण का निर्माण किये जाने की अपेक्षा है। क्योंकि एक टीस-सी मन में उठती है कि आखिर नारी कब तक भोग की वस्तु बनी रहेगी? उसका जीवन कब तक खतरों से घिरा रहेगा? बलात्कार, छेड़खानी, भ्रूण हत्या और दहेज की धधकती आग में वह कब तक भस्म होती रहेगी? कब तक उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नौचा जाता रहेगा?

दरअसल छोटी लड़कियों या महिलाओं की स्थिति अनेक मुस्लिम और अफ्रीकी देशों में दयनीय है। जबकि अनेक मुस्लिम देशों में महिलाओं पर अत्याचार करने वालों के लिये सख्त सजा का प्रावधान है, अफगानिस्तान-तालिबान का अपवाद है। वहां के तालिबानी शासकों ने महिलाओं को लेकर जो फरमान जारी किए हैं वो महिला-विरोधी होने के साथ दिल को

दहलाने वाले हैं। नये तालिबानी फरमानों के अनुसार महिलाएं आठ साल की उम्र के बाद पढ़ाई नहीं कर सकेंगी। आठ साल तक वे केवल कुरान ही पढ़ेंगी। 12 साल से बड़ी सभी लड़कियों और विधवाओं को जबरन तालिबानी लड़कों से निकाह करना पड़ेगा। बिना बुर्के या बिना अपने मर्द के साथ घर से बाहर निकलने वाली महिलाओं को गोली मार दी जाएगी। महिलाएं कोई नौकरी नहीं करेंगी और शासन में भागीदारी नहीं करेंगी। दूसरे मर्द से रिश्ते बनाने वाली महिलाओं को कोडों से पीटा जाएगा। महिलाएं अपने घर की बालकनी में भी बाहर नहीं झांकेंगीं। इतने कठोर, क्रूर, बर्बर और अमानवीय कानून लागू हो जाने के बावजूद अफगानिस्तान की पढ़ी-लिखी और जागरूक महिलाएं बिना डरे सड़कों पर जगह-जगह प्रदर्शन कर रही हैं। दुनिया की बड़ी शक्तियों को इन महिलाओं स्वतंत्र अस्तित्व को बचाने के लिये आगे आना चाहिए।

तमाम जागरूकता एवं सरकारी प्रयासों के भारत में भी महिलाओं की स्थिति में यथोचित बदलाव नहीं आया है। भारत में भी जब कुछ धर्म के ठेकेदार हिंसात्मक और आक्रामक तरीकों से महिलाओं को सार्वजनिक जगहों पर नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं तो वे भी तालिबानी ही नजर आते हैं। विरोधाभासी बात यह है कि जो लोग नारी को संस्कारों की सीख देते हैं, उनमें से बहुत से लोग, धर्मगुरु, राजनेता एवं समाजसुधारक महिलाओं के प्रति कितनी कुत्सित मानसिकता का परिचय देते आए हैं, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। इनके चरित्र का दोहरापन जगजाहिर हो चुका है। कोई क्या पहने, क्या खाए, किससे प्रेम करे और किससे शादी करें, सह-शिक्षा का विरोधी नजरिया- इस तरह की पुरुषवादी सोच के तहत महिलाओं को उनके हकों से वंचित किया जा रहा है, उन पर तरह-तरह की बंदिशें एवं पहरे लगाये जा रहे हैं। वक्त बीतने के साथ सरकार को भी यह बात महसूस होने लगी है। शायद इसीलिए सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका को अलग से चिह्नित किया जाने लगा है।

आये दिन कोई न कोई महिला अत्याचार, बलात्कार एवं शोषण की घटना सुनाई देती है जो दिल को दर्द से भर देती है और बहुत कुछ सोचने को विवश कर देती है। देश के किसी एक भाग में घटी कोई घटना सभी महिलाओं के लिए चिंता पैदा कर देती है। यूं तो महिलाओं के संरक्षण के लिए बहुत सारे कानून बने हैं लेकिन अपराधियों को इनका जरा भी खौफ क्यों नहीं? जब देश में ऐसी कोई घटना घटित होती है तो क्यों लंबे समय तक तारीख पर तारीख लगती रहती हैं? तुरंत फैसला क्यों नहीं हो जाता इन हैवानों एवं महिला अत्याचारियों का? इन आपराधिक घटनाओं को रोकने के लिए क्या हमें भी कुछ मुस्लिम देशों की जैसी क्रूर सजा का प्रावधान करना चाहिए?

एक अपराधी से कानून को क्यों हमदर्दी हो जाती हैं जो उसे अपना पक्ष रखने का अवसर सालों साल मिलता रहता है। आश्चर्य इस बात का होता है कि इन अपराधियों के माता-पिता भी इन्हें बचाने के लिए जी जान से जुड़ जाते हैं। इस तरह कानून का संरक्षण नहीं मिलने से औरत संघर्ष के अंतिम छोर पर लड़ाई हारती रही है। लेकिन महिलाओं के प्रति एक अलग तरह का नजरिया इन सालों में बनने लगा है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नारी के संपूर्ण विकास की संकल्पना को प्रस्तुत करते हुए अनेक योजनाएं लागू की है, जिनमें अब नारी सशक्तीकरण और सुरक्षा के अलावा और भी कई आयाम जोडे.गए हैं। सबसे अच्छी बात इस बार यह है कि समाज की तरक्की में महिलाओं की भूमिका को आत्मसात किया जाने लगा है।

एक कहावत है कि औरत जन्मती नहीं, बना दी जाती है और कई कट्टर मान्यता वाले औरत को मर्द की खेती समझते हैं। इसीलिये आज की औरत को हाशिया नहीं, पूरा पृष्ठ चाहिए। पूरे पृष्ठ, जितने पुरुषों को प्राप्त हैं। पर विडम्बना है कि उसके हिस्से के पृष्ठों को धार्मिकता के नाम पर ह्यधर्मग्रंथह्ल एवं सामाजिकता के नाम पर ह्यखाप पंचायतेह्ल घेरे बैठे हैं। पुरुष-समाज को उन आदतों, वृत्तियों, महत्वाकांक्षाओं, वासनाओं एवं कट्टरताओं को अलविदा कहना ही होगा जिनका हाथ पकड़कर वे उस ढ़लान में उतर गये जहां रफ्तार तेज है और विवेक अनियंत्रण हैं जिसका परिणाम है नारी पर हो रहे नित-नये अपराध और अत्याचार। पुरुष-समाज के प्रदूषित एवं विकृत हो चुके तौर-तरीके ही नहीं बदलने हैं बल्कि उन कारणों की जड़ों को भी उखाड़ फेंकना है जिनके कारण से बार-बार नारी को जहर के घूंट पीने एवं बेचारगी को जीने को विवश होना पड़ता है। पुरुषवर्ग नारी को देह रूप में स्वीकार करता है, लेकिन नारी को उनके सामने मस्तिष्क बनकर अपनी क्षमताओं का परिचय देना होगा, उसे अबला नहीं, सबला बनना होगा, बोझ नहीं शक्ति बनना होगा।

ह्ययत्र पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताह्ल- जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। किंतु आज हम देखते हैं कि नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे ह्यभोग की वस्तुह्ल समझकर आदमी ह्यअपने तरीकेह्ल से ह्यइस्तेमालह्ल कर रहा है, यह बेहद चिंताजनक बात है। आज अनेक शक्लों में नारी के वजूद को धुंधलाने की घटनाएं शक्ल बदल-बदल कर काले अध्याय रच रही है। देश में गैंग रेप की वारदातों में कमी भले ही आयी हो, लेकिन उन घटनाओं का रह-रह कर सामने आना त्रासद एवं दुःखद है। आवश्यकता लोगों को इस सोच तक ले जाने की है कि जो होता आया है वह भी गलत है। महिलाओं के खिलाफ ऐसे अपराधों को रोकने के लिए कानूनों की कठोरता से अनुपालना एवं सरकारों में इच्छाशक्ति जरूरी है। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के विरोध में लाए गए कानूनों से नारी उत्पीड़न में कितनी कमी आयी है, इसके कोई प्रभावी परिणाम देखने में नहीं आये हैं, लेकिन सामाजिक सोच में एक स्वतः परिवर्तन

दांत ही नहीं इन 10 जगहों के लिए भी फायदेमंद है टूथपेस्ट

प्रतिदिन सुबह उठते ही हम कुल्ला करने के साथ ही ब्रश करते हैं। दाँतों की सफाई और रात का खाना खाने के बाद मुँह में पैदा हुई बदबू को दूर करने के लिए हम ब्रश पर टूथ पेस्ट लगा कर दाँतों को चमकाते हैं। टूथपेस्ट करने के बाद मुंह से बदबू आना बंद हो जाती है और शरीर में नई ताजगी का अहसास होता है। बहुत ही कम लोगों को यह जानकारी होगी कि टूथपेस्ट से सिर्फ दांतों को साफ करने का काम ही नहीं किया जाता है अपितु यह कई अन्य कामों में भी इस्तेमाल की जा सकती है। आइए डालते हैं एक नजर उन दूसरे कामों पर जिनमें हम टूथपेस्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं–

1. कई बार रसोई में काम करते हुए अचानक से महिलाओं के हाथ या बाँह गरम तवे या गरम बर्तन से छू जाता है। जिस स्थान पर यह गरम अचानक से लगता है वहाँ पर छाले पड की सम्भावना हो जाती है। यदि आप चाहते हैं कि आपको छाले या फफुले न पड़े तो तुरन्त उस स्थान पर आप टूथपेस्ट लगा लें। टूथपेस्ट लगाने के बाद आपको उस स्थान पर ठंडक का अहसास होने के साथ ही फफूले भी नहीं होंगे।

2. किशोरावस्था में कदम रखते ही युवाओं के चेहरे पर कील मुंहासे अर्थात पिंपल निकलने शुरू हो जाते हैं। यदि आपके चेहरे पर पिंपल निकल रहे हैं तो आप उन पर टूथपेस्ट लगा लें। कम से कम 20 मिनट बाद आप उसे ठंडे पानी से धो लें। आपके चेहरे पर पिंपल अर्थात मुँहासे कम हो जाएंगे।

3. अगर आप के कपड़ों पर स्याही का दाग लग गया है तो आप उस पर कुछ मिनटों के लिए टूथपेस्ट लगाकर छोड़ दें। फिर धो लें। दाग चला जाएगा।ड्ढ्री अ ट्र'ङ्कल्लंश्

4. वैसे तो चांदी और पीतल के बर्तनों को साफ करने के लिए मिट्टी और अमचूर का प्रयाग किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि टूथपेस्ट का प्रयोग चांदी और पीतल के बर्तनों को को साफ करने के लिए किया जा सकता है। ब्रश पर थोड़ा सा पेस्ट लेकर चांदी और पीतल के बर्तनों पर लगा दे और थोड़ी देर बाद उसे पानी से धो लें। आपके चांदी और पीतल के बर्तन नए बर्तनों की तरह दमकने लगेंगे।

5. मच्छर या कीड़ा काट ले, तो उस जगह पर टूथपेस्ट लगा लें। यह दर्द को कम करेगा।

6. महिलाएँ अक्सर अपने हीरे जड़ित कंगनों को साफ करने के लिए परेशान होती नजर आती हैं। यदि आपके पास हीरे जड़ित कंगन या अंगूठी है तो आप उसे चमकदार बनाने के लिए टूथपेस्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

7. कमोबेश हर परिवार के बाथरुम नलों में जंग लगी नजर आती है। यदि स्टील के नल हैं तो उन पर अजीब से सफेद परत नजर आने लगती हैं। नलों को फिर से नया बनाने के लिए आप उसे टूथपेस्ट लगाकर धो लें तो नल फिर से नए हो जाएंगे।

8. अपने नाखूनों को प्राकृतिक चमक देने के लिए हलका सा टूथपेस्ट नाखूनों पर लगाएं और टूथब्रश से साफ कर लें।

9. चश्मे को साफ करने के लिए हल्का सा टूथपेस्ट लगा कर चश्मे को पोंछ लें।

10.चाय का कप या पानी का गिलास वुडेन फर्नीचर पर रख देते हैं, जिस से वहां पानी का गोल निशान सा बन जाता है। इस निशान को हटाने के लिए हलका सा टूथपेस्ट उस जगह लगा दें और साफ कपड़े से पोंछ लें।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
सभी देशवासियों को
नवरात्रि
एवं
कलश स्थापना
की
हार्दिक शुभकामनाएं
aap
AAM AADMI PARTY
bishnupathak
bishnupathak
bishnupathak
पूर्वांचल शक्ति प्रदेश उपाधयक्ष (बिष्णु पाठक)

Coming Soon
आवश्यकता है पूरे देश में ब्यूरो प्रमुख, विज्ञापन प्रतिनिधि की, इच्छुक व्यक्ति अविलंब संपर्क करें।
CB News
24x7
खबर हमारी,फैसला आपका
www.cbnews24x7.com
CB NEWS 24x7

समस्त देशवासियों को नवरात्रि
की हार्दिक शुभकामनाएं
दिनेश प्रताप सिंह
प्रदेश महामंत्री
दिल्ली भाजपा

समस्त देशवासियों को नवरात्रि
की हार्दिक शुभकामनाएं
अमरेन्द्र शर्मा
जिला अध्यक्ष
पूर्वांचल मोर्चा भाजपा
शाहदरा